www.thearyasamaj.org
डाक पंजीयन संख्या–एसएसपी/एल०डब्ल्यू०/एन०पी०/318/2011-13

ओ३म्

कृण्वन्तुविश्वे अमृतस्य पुत्राः

आर्य्य लोक वार्ता

लखनऊ से प्रकाशित वैदिक विचारधारा का हिन्दी मासिक

वर्ष-१६, अंकः-६, दिसम्बर, सन्-२०१३, सं०-२०७० वि०, दयानंदाब्द १९०, सृष्टि सं० १,९६,०८,५३,११४; मूल्य : एक प्रति ५.००रु., वार्षिक सहयोग १००.०० रुपये

इतिहास से झरोखे से

हीरालाल से अब्दुल्लाह, फिर अब्दुल्लाह से हीरालाल हुए महात्मा गाँधी के पुत्र

आर्य समाज के आलोचक रहे महात्मा गाँधी को आर्य समाज ने दिया सहारा

-डॉ. विवेक आर्य-

'महात्मा गाँधी एण्ड इस्लाम - फेथ एण्ड फ्रीडम : गाँधी इन हिस्ट्री' के नाम से मुशीरुल हसन नामक लेखक की नई पुस्तक प्रकाशित हुई है जिसमें लेखक ने इस्लाम के सम्बन्ध में महात्मा गाँधी के विचार प्रकट किये हैं। इस पुस्तक के प्रकाश में आने से महात्मा गाँधी जी के आर्य समाज से जुड़े पुराने प्रसंग मस्तिष्क में पुनः स्मरण हो उठे। स्वामी श्रद्धानन्द जी की कभी मुक्तकंठ से प्रशंसा करने वाले महात्मा गाँधी जी का स्वामी जी से कांग्रेस द्वारा दलित समाज का उद्धार, इस्लाम, शुद्धि और हिन्दू संगठन विषय को लेकर मतभेद था। महात्मा गाँधी ने आर्य समाज, स्वामी दयानन्द, सत्यार्थ प्रकाश और स्वामी श्रद्धानन्द जी के विरुद्ध लेख २६ मई १९२४ को 'हिन्दू मुस्लिम वैमनस्य, उसका कारण और उसकी चिकित्सा' के नाम से लिखा था। इस लेख में भारत भर में हो रहे हिन्दू मुस्लिम दंगों का कारण आर्य समाज को बताया गया। इस लेख का सबसे अधिक दुष्प्रभाव इस्लाम को मानने वालों की सोच पर पड़ा था क्योंकि महात्मा गाँधी का समर्थन मिलने से उन्हें लगने लगा था कि जो भी नैतिक अथवा अनैतिक कार्य वे इस्लाम के प्रचार प्रसार के लिए कर रहे हैं, वे उचित हैं एवं उनके अनैतिक कार्यों का विरोध करने वाला आर्य समाज असत्य मार्ग पर है इसीलिए महात्मा गाँधी भी आर्य समाज और उनकी मान्यताओं का विरोध कर रहे हैं। सब पाठकगण शायद जानते ही होंगे कि महात्मा गाँधी द्वारा रंगीला रसूल के विरुद्ध लेख लिखने के बाद ही मुस्लिम समाज के कुछ कट्टरपंथी तत्त्व महाशय राजपाल की जान के प्यासे हो गये थे जिसका परिणाम उनकी शहादत और इलमदीन की फाँसी के रूप में निकला था। महात्मा गाँधी के आर्य समाज के विरुद्ध लिखे गये लेख का प्रतिउत्तर आर्य समाज के अनेक विद्वानों ने दिया जैसे लाला लाजपत राय, मिस्टर केलकर, मिस्टर सी.एस.रंगा अय्यर, महात्मा टी. एल.वासवानी, स्वामी सत्यदेव जी एवं पंडित चमूपति जी आदि।

आर्य समाज की ओर से एक डेलीगेशन के रूप में पं.आर्यमुनि, पं. रामचन्द्र देहलवी, इन्द्र जी विद्यावाचस्पति स्वयं गांधी जी से उनके लेख के विषय में मिले परन्तु गांधी जी ने उत्तर देने के स्थान पर टाल-मटोल कर मौन धारण कर लिया था।

कालांतर में सार्वदेशिक सभा दिल्ली के सदस्य श्री ज्ञानचंद आर्य ने अत्यंत रोचक पुस्तक उर्दू में 'इज़हारे हक़ीक़त' के नाम से लिखी जिसका हिन्दी अनुवाद 'सत्य निर्णय' के नाम से १९३३ में छापा गया। इस पुस्तक में लेखक ने महात्मा गाँधी द्वारा जो आरोप लगाये गये थे न केवल उनका यथोचित समाधान किया है अपितु गाँधी जी की हिन्दू धर्म के विषय में जो भी मान्यता थी उनका उचित विश्लेषण किया है।

आर्य समाज के प्रकाण्ड विद्वान पंडित धर्मदेव विद्यामार्तण्ड द्वारा आर्य समाज और महात्मा गाँधी के शीर्षक से एक और महत्त्वपूर्ण पुस्तक लिखी गई थी जिसका पुनः प्रकाशन घूड़मल ट्रस्ट हिंडौन सिटी राजस्थान ने हाल ही में किया है।

गाँधी जी के शुद्धि विषयक विचार आर्य समाज की विचारधारा के प्रतिकूल थे। गाँधी जी एक ओर शुद्धि से हिन्दू मुस्लिम वैमनस्य को बढ़ावा देना मानते थे दूसरी ओर मुसलमानों द्वारा गैर मुसलमानों की तब्लीग करने पर चुप्पी धारण कर लेते थे। १९२१ के मालाबार के हिन्दू मुस्लिम दंगों के समय तो आर्य समाज खिलाफत आन्दोलन के लिए मुसलमानों का साथ दे रहा था, फिर शुद्धि को हिन्दू मुस्लिम दंगों का कारण बताना असत्य नहीं तो और क्या था? मुल्तान में हुए भयंकर दंगों का कारण ताजिये के ऊपर बंधी डंडी का टेलीफोन की तार से उलझ कर टूट जाना था जिससे आक्रोशित होकर मुस्लिम दंगाइयों ने निरीह हिन्दू जनता पर भयंकर अत्याचार किये थे। कोहाट के दंगों के कारण एक हिन्दू लड़की को कुछ हिन्दू एक मुस्लिम की गिरफ्त से छुड़वा लाये थे जिससे चिढ़कर मुसलमानों ने हथियार सहित हिन्दू बस्तियों पर हमला बोल दिया जिससे हिन्दू जनता को कोहाट से भागकर अपने प्राण बचाने पड़े थे। एक प्रकार के अन्य दंगों का कारण खिलाफत आन्दोलन के कारण बदली हुई मुस्लिम मनोवृत्ति, अंग्रेजों की फूट डालो और राज करो की नीति, हिन्दू संगठन का न होना एवं तत्कालीन कांग्रेस द्वारा नर्म प्रतिक्रिया दिया जाना था- नाकि सत्यार्थ प्रकाश का १४वां समुल्लास, आर्य समाज द्वारा चलाया गया शुद्धि आन्दोलन, शास्त्रार्थ एवं लेखन कार्य था।

विस्तार भय से हम गाँधी जी के विचारों को इस लेख में केवल शुद्धि विषय तक ही सीमित कर रहे हैं क्योंकि जहाँ एक ओर गाँधी जी ने आर्यसमाज के शुद्धि मिशन की भरपूर आलोचना की थी कालांतर में उन्हीं के सबसे बड़े सुपुत्र हीरालाल गाँधी के मुसलमान बन जाने पर आर्य समाज द्वारा ही शुद्धि द्वारा वापिस हिन्दू धर्म में दोबारा से शामिल किया गया था।

हीरालाल के धर्म परिवर्तन कर मुस्लिम बन जाने पर महात्मा गाँधी जी का वक्तव्य (सन्दर्भ- सार्वदेशिक पत्रिका, जुलाई अंक, १९३६)- "महात्मा गाँधी के सबसे बड़े पुत्र हीरालाल गाँधी तारीख २८ मई को नागपुर में गुप्त रीति से मुसलमान बनाये गये हैं और नाम अब्दुल्लाह गाँधी रखा गया है तथा २६ मई को बम्बई की जुम्मा मस्जिद में उनके मुसलमान बनने की घोषणा की गई।"

कुछ दिन हुए यह खबर थी कि वे ईसाई होने वाले हैं पर बाद में हीरालाल गाँधी ने स्वयं ईसाई न होने की घोषणा की थी। उन्होंने कहा कि वे अपने पिता महात्मा गाँधी से मतभेद होने के कारण मुसलमान हो गये हैं।

महात्मा गाँधी जी का वक्तव्य

बंगलौर २ जून। अपने बड़े लड़के हीरालाल गाँधी के धर्म परिवर्तन के सिलसिले में महात्मा गाँधी ने मुसलमान मित्रों के नाम एक अपील प्रकाशित की है। अपील का आशय निम्न है-

'पत्रों में समाचार प्रकाशित हुआ है कि मेरे पुत्र हीरालाल के धर्म परिवर्तन की घोषणा पर जुम्मा मस्जिद में मुस्लिम जनता ने अत्यंत हर्ष प्रकट किया है। यदि उसने हृदय से और बिना किसी सांसारिक लोभ के इस्लाम धर्म को स्वीकार किया होता तो मुझे कोई आपत्ति नहीं थी। क्योंकि मैं इस्लाम को अपने धर्म के समान ही सच्चा समझता हूँ किन्तु मुझे संदेह है कि वह धर्म पवित्र हृदय से तथा बगैर किसी सांसारिक लाभ के किया गया है।'

शराब का व्यसन

जो भी मेरे पुत्र हीरालाल से परिचित हैं वे जानते हैं कि उसे शराब और व्यभिचार की लत पड़ी है। कुछ समय तक वह अपने मित्रों की सहायता पर गुजारा करता रहा। उसने कुछ पठानों से भी भारी सूद पर कर्ज लिया था। अभी कुछ दिनों की बात है कि बम्बई में पठान लेनदारों के कारण उसको जीवन के लाले पड़े हुए थे। अब वह उसी शहर में सूरमा बना हुआ है। उसकी पत्नी अत्यंत पतिव्रता थी। वह हमेशा हीरालाल के पापों को क्षमा करती रही। उसके तीन संतान हैं, दो लड़की और एक लड़का, जिनके लालन-पालन का भार उसने बहुत पहले ही छोड़ रखा है।

धर्म की नीलामी

कुछ सप्ताह पूर्व ही उसने हिन्दुओं के हिन्दुत्व के विरुद्ध शिकायत करके ईसाई बनने की धमकी दी थी। पत्र की भाषा से प्रतीत होता है कि वह उसी धर्म में जायेगा जो सबसे ऊँची बोली बोलेगा। उस पत्र का वांछित असर हुआ। एक हिन्दू काउंसिलर के मदद से उसे नागपुर मुन्सीपालिटी में नौकरी मिल गई। इसके बाद उसने एक और वक्तव्य प्रकाशित किया और हिन्दू धर्म के प्रति पूर्ण आस्था प्रकट की।

आर्थिक लालसा

किन्तु घटनाक्रम से मालूम पड़ता है कि उसकी आर्थिक लालसाएँ पूरी नहीं हुईं और उसको पूरा करने के लिए

(शेष पृ. 3 पर.....)

विनय पीयूष

जिसका आश्रय अमृत है !

य आत्मदा बलदा यस्य विश्व उपासते प्रशिषं यस्य देवाः।
यस्यच्छायाऽमृतं यस्य मृत्युः कस्मै देवाय हविषा विधेम।।

(यजु० 25/13)

जो दाता आत्मा का है,
बल का दाता है,
ज्ञानरूप विद्वानों में
पूजा जाता है;
जिसका आश्रय अमृत है,
अन्यथा मृत्यु है,
सुख-स्वरूप उस प्रभु को
अपना हवि दें हम !

काव्यानुवाद : अमृत खरे

सम्पादकीय

मेरी चार धाम यात्रा

जिन दिनों मैं मुंगेरीलाल की तरह चार धाम यात्रा के हसीन सपने देख रहा था; उन दिनों देश में गणेशोत्सव की धूम थी। और जगह जगह पर गणेश जी की सुंदर प्रतिमाएँ गढ़ी जा रही थीं। मैंने देखा- प्रतिमाओं को गढ़ने और उनका रूप सौंदर्य निखारने में ही श्रद्धालु अपने कर्तव्य की इतिश्री समझ बैठे हैं; गणेश जी के जीवनादर्श की तरफ शायद ही किसी का ध्यान जाता हो। कोई भी यह सोचने को तैयार नहीं है कि गणेशजी ने कभी बाल्यकाल में अपने अग्रज कुमार कार्तिकेय से 'ब्रह्माण्ड-परिक्रमा-प्रतियोगिता'- माता पार्वती की परिक्रमा करके जीत ली थी और विश्वमानव को यह संदेश दिया था- 'नास्ति माता समं तीर्थ'- अर्थात् माता से बढ़कर कोई तीर्थ नहीं है। शतपथ ब्राह्मण का ऋषि कहता है-"मातृमान पितृमानाचार्यवान पुरुषो वेद"। गोस्वामी तुलसी दास संदेश देते हैं-

चारि पदारथ करतल ताके,
गुरु पितु मातु प्रानप्रिय जाके।

बुद्धिराशि गणेश जी से मातृ वंदना का सबक तो मिला किन्तु मेरी माता तो इस दुनिया में हैं नहीं, पिताजी भी नहीं हैं- सहसा ध्यान आया कि गुरुवर आचार्य अभी हैं और सम्प्रति दिल्ली में ही हैं। अपने ज्येष्ठ पुत्र पीयूष श्रीवास्तव तथा पुत्रवधू डॉ.नीलिमा के पास। एक लम्बा अर्सा हो चुका है, उनसे मिले हुए- यहां तक अभी विगत २ जनवरी २०१३ की ब्रह्मवेला में जब गुरुवर की सहचारिणी शकुन्तला जी पार्थिव देह को त्याग कर चिदानंदमय इष्टधाम में निवास हेतु प्रस्थान कर गयीं- तो भी हमलोग उनके पास नहीं पहुंच पाये थे। अस्तु, 'चारधाम की दुर्वह और दुरूह तीर्थयात्रा के विकल्प के रूप में दिल्ली में आचार्य जी के दर्शनों की यह यात्रा अधिक आत्मतोष एवं शान्तिदायिनी होगी।'

मैंने विचारा कि आचार्य का स्थान जब मानव जीवन में इतना ऊँचा है- तो उनसे मिलने का साधन भी उच्चतम होना चाहिए। अस्तु, चारधाम यात्रा को विमान से तय करने का हमने निर्णय लिया- इस निर्णय में मेरे अभिन्न डॉ. उमाशंकर शुक्ल 'शितिकण्ठ' सहभागी रहे क्योंकि उनका भी आचार्यप्रवर से मेरी तरह ही श्रद्धासमन्वित लगाव रहा है। मेरी यह चारधाम यात्रा- ३१ अगस्त, शनिवार को भगवत्कृपा से मात्र १२ घण्टों में पूर्ण हो गई अर्थात् ८ बजे प्रातः इन्दिरानगर, लखनऊ से चलकर सायंकाल ८ बजे इंदिरानगर लखनऊ आवास पर वापस आ गये।

यह पहली विमान यात्रा थी। विमान पर बैठा तो लगा मानो किसी दो मंजिले मकान की छत पर बैठा हूँ। मेरी सीट १६ए, खिड़की के पास ही थी, जो बाह्य दृश्यावलोकन की चिरसंचित अभिलाषा की पूर्ति में सहायक थी। विमान के लंबे लंबे विशाल डैने नीचे दृश्यावलोकन में बाधक जरूर थे किन्तु वे स्वतः आकर्षण का केन्द्र बन रहे थे। ऊपर उठते हुए विमान से नीचे पृथ्वी पर नजर डालते ही दियासलाई की तीलियों से बने हुए मकान और सड़कें, चींटियों से रेंगते हुए वाहन। टेढ़ी-मेढ़ी सफेद पट्टियों सी नदियां और नहरें- फिर सभी कुछ गायब। मौसम में नमी थी, सबेरे कुछ बूंदें भी पड़ी थीं, अतः विमान उड़ने के १५ मिनट बाद अब हम बादलों के ऊपर उड़ रहे थे- नीचे जहाँ भी दृष्टि जाती थी, कहीं धुएँ की तरह, तो कहीं गहरे नीले रंग और फिर रूई के बड़े बड़े फाहों की तरह मेघमालाएँ। शायद इसीतरह की मेघमालाओं को देखकर सुमित्रानन्दन पंत ने कभी कहा था-

धूम धुँआरे काजर कारे, हम ही मतवारे बादर।
मदनराज के वीर बहादर, पावस के उड़ते फणधर।

विमान से उतरने और औपचारिकताओं के दौर से गुजरने के बाद बाहर की व्यवस्था से टैक्सी सुलभ हुई जिसने ११ बजे पहुँचा दिया- गुरुवर आवास-३५, नेवसराय, इग्नू मेनरोड, कार्पोरेशन बैंक, द्वितीय तल, नई दिल्ली-३५ जहाँ गुरुवर डॉ.देवकीनन्दन श्रीवास्तव की पुत्रवधू नीलिमा जी, जो विश्वविद्यालय में प्रोफेसर हैं- हमारी प्रतीक्षा कर रही थीं। नीलिमा जी के अपने हाथों से बने सुस्वादु सात्विक भोजन ने मार्ग की सारी थकान मिटा दी।

२०१३ के प्रारम्भ में ही, सहधर्मिणी चिदानंदमयी देवी शकुन्तला के चिर-वियोग को गुरुदेव ने जिस समझदारी और सहजता से लिया था- वह उनके ऋषित्व का बोधक है। 'चित्रकूट के पथ पर', 'बरवै सतसई' जैसे लौकिक धरातल के काव्यों से उड़ान भरकर उन्होंने 'साकेत से वृन्दावन' जैसे बृहद् महाकाव्य का प्रणयन किया, 'तुलसी की भाषा', 'काव्यशास्त्र चर्चा' जैसे विचारपूर्ण साहित्यशास्त्र के ग्रंथों की रचना की; सूफी कवि जायसी का विशिष्ट अध्यापन तथा नई कविता के प्रतिमानों का विश्लेषण किया। सबकी चरम परिणति के रूप में योगिराज अरविन्द के उच्चतर चेतना के रूपान्तरण एवं दर्शन की थाह पाने में आत्मतोष का अनुभव किया। ऐसे गुरुदेव का दर्शन, चरणार्चन किसी चारधाम यात्रा से न्यून कैसे आँका जा सकता है? लखनऊ विश्वविद्यालय हिन्दी विभाग में स्व.डॉ.भगीरथ मिश्र के सुयोग्य शिष्य के रूप में अध्यापन कार्य प्रारंभ करने वाले इस साधक-प्राध्यापक को १६७७ में गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर की तपोभूमि शान्तिनिकेतन विश्वविद्यालय में प्रोफेसर नियुक्त किया गया, जहाँ से सेवानिवृत्त होने पर १६६५ में सरदार पटेल विश्वविद्यालय, विद्यानगर, आनंद, गुजरात में श्री अरविन्द चेयर ऑफ इंटेग्रल स्टडीज के चेयरपर्सन पद को छः वर्षों तक प्रतिष्ठित करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। डी.ए.वी.कालेज, आजमगढ़ के अपने कार्यकाल के दौरान मैंने गुरुदेव के व्याख्यान का आयोजन किया था। मुझे स्मरण है कि एक बार जब वे नगर पालिका आजमगढ़ के सभागार में श्री अरविन्द जन्मशताब्दी समारोह को सम्बोधित कर रहे थे तो प्रखर पत्रकार श्री कामता सिंह 'विरागी' ने बीच में ही कहा था-

"अरिविन्दो हिमसेल्फ स्पीकिंग"
(यह तो स्वयं महर्षि अरविन्द बोल रहे हैं)

सत्यार्थ प्रकाश वार्ता-१३६

युग प्रवर्त्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती के अमरग्रंथ 'सत्यार्थ प्रकाश' के धारावाहिक स्वाध्याय के क्रम में सप्तम समुल्लास का अंश

(प्रश्न) परमेश्वर सादि है वा अनादि?

(उत्तर) अनादि अर्थात् जिसका आदि कोई कारण वा समय न हो उसको अनादि कहते हैं। इत्यादि सब अर्थ प्रथम समुल्लास में कर दिया है देख लीजिये।

(प्रश्न) परमेश्वर क्या चाहता है?

(उत्तर) सबकी भलाई और सब के लिए सुख चाहता है परन्तु स्वतन्त्रता के साथ किसी को बिना पाप किये पराधीन नहीं करता।

(प्रश्न) परमेश्वर की स्तुति प्रार्थना और उपासना करनी चाहिए वा नहीं?

(उत्तर) करनी चाहिये।

(प्रश्न) क्या स्तुति आदि करने से ईश्वर अपना नियम छोड़ स्तुति प्रार्थना करनेवाले का पाप छुड़ा देगा?

(उत्तर) नहीं।

(प्रश्न) तो फिर स्तुति प्रार्थना क्यों करना?

(उत्तर) स्तुति से ईश्वर में प्रीति, उसके गुण कर्म स्वभाव से अपने गुण कर्म स्वभाव का सुधारना, प्रार्थना से निरभिमानता, उत्साह और सहाय का मिलना, उपासना से परब्रह्म से मेल और उसका साक्षात्कार होना।

(प्रश्न) इनको स्पष्ट करके समझाओ?

स्तुति प्रार्थनादि का फल

(उत्तर) जैसे-

स पर्यगाच्छुक्रमकायमव्रणमस्नाविर शुद्धमपापविद्धम्। कविर्मनीषी परिभूः स्वयम्भूर्याथातथ्यतोऽर्थान् व्यदधाच्छाश्वतीभ्यः समाभ्यः॥१॥ यजु./४०/८

ईश्वर की स्तुति- वह परमात्मा सब में व्यापक, शीघ्रकारी और अनन्त बलवान् जो शुद्ध, सर्वज्ञ, सबका अन्तर्यामी, सर्वोपरि विराजमान, सनातन, स्वयंसिद्ध, परमेश्वर अपनी जीवरूप सनातन अनादि प्रजा को अपनी सनातन विद्या से यथावत् अर्थों का बोध वेद द्वारा कराता है। यह सगुण स्तुति अर्थात् जिस-जिस गुण से सहित परमेश्वर की स्तुति करना वह सगुण; (अकाय) अर्थात् वह कभी शरीर धारण वा जन्म नहीं लेता, जिसमें छिद्र नहीं जोता, नाड़ी आदि के बन्धन में नहीं आता और कभी पापाचरण नहीं करता, जिसमें क्लेश दुःख अज्ञान कभी नहीं होता, इत्यादि जिस-जिस राग द्वेषादि गुणों से पृथक् मानकर परमेश्वर की स्तुति करना है वह निर्गुण स्तुति है। इससे फल यह है कि जैसे परमेश्वर के गुण हैं वैसे गुण कर्म स्वभाव अपने भी करना। जैसे वह न्यायकारी है तो आप भी न्यायकारी होवें। और जो केवल भांड के समान परमेश्वर के गुणकीर्तन करता जाता और अपने चरित्र नहीं सुधारता उसका स्तुति करना व्यर्थ है। प्रार्थना-

यां मेधां देवगणाः पितरश्चोपासते। तया मामद्य मेधयाऽग्ने मेधाविनं कुरु स्वाहा॥१॥ यजु./३२/१४

हे अग्ने! अर्थात् प्रकाशस्वरूप परमेश्वर आप कृपा से जिस बुद्धि की उपासना विद्वान्, ज्ञानी और योगी लोग करते हैं उसी बुद्धि से युक्त इसी वर्तमान समय में बुद्धिमान् आप कीजिये।।१।। (क्रमशः)

वेदांजलि

धनार्जन का सत्परामर्श

❑ पं.शिव कुमार शास्त्री
भू.पू.संसद सदस्य

**परि चिन्मर्तो द्रविणं ममन्यादृतस्य पथा नमसा विवासेत्।
उत स्वेन क्रतुना सं वदेत श्रेयांसं दक्षं मनसा जगृभ्यात्।।**

–ऋग्वेद 10/31/2

शब्दार्थ–

(मर्तः) मानव को **(चित्)** उचित है कि **(द्रविणम्)** धन को **(परि)** परिश्रम से **(ममन्यात्)** अर्जित करे **(ऋतस्य)** ऋजुता और सचाई के साथ **(पथः)** मार्ग का, व्यवहार का **(नमसा)** विनयपूर्वक **(आविवासेत्)** आचरण करे। **(उत)** और **(स्वेन)** अपने **(क्रतुना)** पुनीत कर्म से **(संवदेत)** धन को प्रकट करे। **(श्रेयांसम्)** उत्तम कल्याणकारी **(दक्षम्)** व्यवसाय के व्यवहार को **(मनसा)** मनोयोगपूर्वक **(जगृभ्यात्)** ग्रहण करे।

व्याख्या–

मंत्र में धनार्जन के लिए कुछ महत्त्वपूर्ण परामर्श दिये गए हैं-

पहला-यह कि धन को परिश्रम से कमाने की सोचो, झटके की कमाई का प्रलोभन मन में मत आने दो।

दूसरा-यह कि व्यवहार में सत्य को हाथ से मत जाने दो।

तीसरा-यह कि व्यवहार में नम्रता और शालीनता रहे।

चौथा-अन्तिम यह कि व्यवसाय को अपनी रुचि के अनुसार चुनो ताकि वह काम तुम्हारा मनोरंजन भी करे, बोझ बनकर उबानेवाला न हो।

संसार में, संसार के ढंग से जीवन यापन के लिए, धन अनिवार्य है। निर्धन व्यक्ति पंखकटे पक्षी के समान है, जो नाममात्र जीवित है; न कहीं जा-आ सकता है और न पेट की आग ही बुझा सकता है। निर्वाह की आवश्यकता के पश्चात् मनुष्य की समाज में सम्मान पूर्वक जीने की इच्छा होती है। पैसे के अभाव में आपके सब सद्गुण निरर्थक से लगते हैं और समुदाय में जो सम्मान मिलना चाहिए वह भी नहीं मिलता।

'देश की बात' नामक पुस्तक में, जो अंग्रेजों के शासनकाल में ज़ब्त थी, एक उल्लेख है कि अकबर ने अपने वजीर को खजाने की विद्यमान आर्थिक स्थिति का आकलन करके ब्यौरा प्रस्तुत करने को कहा। आदेश के पश्चात् तीन महीने बीतने पर भी जब वजीर ने कोई उत्तर न दिया तो बादशाह ने पूछा-"हमने तीन माह हुए आपसे खजाने की स्थिति बताने को कहा था, आपने अभी तक कोई उत्तर नहीं दिया?" इस पर वजीर ने कहा-"बादशाह सलामत! आपने जब से आदेश दिया था, तभी से सात सौ आदमी तराजू-बाट लेकर प्रतिदिन काम के पूरे समय खजाने के सोना-चाँदी तोलने में लगे रहते हैं, अभी तक वे पूरी नाप-तोल नहीं कर पाए और जबतक काम पूरा न हो जावे, मैं आपको कैसे उत्तर दे सकता था?" भारत कितना समृद्ध देश था, इन लेखों से अनुमान करिये! इन इतिवृत्तों से परिणाम निकलता है कि धार्मिक संस्कार और उच्चचरित्र के अभाव में धन भी अभिशाप बन जाता है। वह सुख न देकर दुःख देता है, अतः किसी उर्दू के शायर ने ठीक ही कहा है-

तंगदस्ती भी बुरी, माल की कसरत भी बुरी।
बस इन्हीं बातों से ईमान बदल जाता है।।

अत्यधिक निर्धनता भी मनुष्य को बुराई की ओर धकेलती है। अर्थशास्त्री कहते हैं, जैसे खाली बोरी खड़ी नहीं हो सकती, जबतक कि उसके पेट में अन्न न भर दिया जावे, उसी प्रकार भूखा व्यक्ति भी ईमानदार नहीं रह सकता। संस्कृत के कवि ने भी ठीक ही कहा है-"**बुभुक्षितः किन्न करोति पापम्**"-भूखा मनुष्य कौन-सा पाप करने को नहीं उतारू हो जाता।

अतः धन को अपेक्षित महत्त्व तो देना ही चाहिए। इसमें दो ही बातों की सावधानी आवश्यक है-पहली अर्जन प्रक्रिया और दूसरी उपभोग की मर्यादा।

धन कमाने के विषय में वेद के इस मंत्र में कहा गया- धन परिश्रम से कमाओ! एक स्थान से लेकर दूसरे स्थान पर जाम करने का नाम कमाना नहीं है। अस्ली कमाई तो देश का उत्पादन बढ़ाने में है। ऐसे व्यवसाय और काम, जिनकी न्यूनता की पूर्ति के लिए देश को परमुखापेक्षी होन पड़ता है, देश के बुद्धिमान् नागरिकों को परिश्रम करके उनका उत्पादन करना चाहिए।

मंत्र में दूसरी बात कही, व्यापार में ऋत-स्पष्टता और सत्यनिष्ठा होनी चाहिए। स्पष्ट और सत्याश्रित लेन-देन में समय की बचत और निश्चिन्तता रहती है। ग्राहक को यह भरोसा होना चाहिए कि मुझे चीज ठीक दी जा रही है, ठीक भाव पर दी जा रही है। इसमें मेरे साथ कोई धोखा नहीं हो सकता। विचारके देखिये, ऐसे व्यवहार में कितना बोझ हल्का हो जाता है। आज तो यह हालत है कि घण्टों भाव तय करने में मगज-खपाई करनी पड़ती है, फिर भी यह निश्चिन्तता नहीं होती कि चीज हमें ठीक और उचित मूल्य पर मिल गई है। किसी देश के सुसंस्कृत होने का पैमाना ही यह है कि वहां व्यवहार में सत्य कितना है?

मंत्र की तीसरी बात है व्यवहार में नम्रता और शिष्ट भाषा का प्रयोग होना चाहिए। आज इस व्यवहार में भी बहुत सुधार की आवश्यकता है। किसी वस्तु के गुण-दोष के विषय में दुकानदार से पूछिये। शायद ही आपको कोई ऐसा मिलेगा जो सन्तोषजनक और शान्तभाव से आपको उत्तर दे।

भारत को आदर्श देश बनाने के लिए हमें निर्दिष्ट उपदेशों को अपने व्यवहार में लाना चाहिए। ('श्रुति सौरभ' से साभार)

दयानन्द चरितम्

-आचार्य दीपंकर, मेरठ

छन्द-६८

विचारस्ते तर्कं द्रढयति जडत्वं च हरति
महान्धान् विश्वासान् जर्षति हृदयं मोदयति च।
सुविस्मृत्यात्मानं जनगणविलीनो विजयसे
पुराणो वा नव्यस्त्वमसि भुवि सर्वस्वमपि नः।।

तुम्हारी विचार शैली
तार्किकता दृढ़ करती है और
मानसिक कुण्ठायें दूर करती हैं !
अन्धविश्वास खा जाती है
और मनों में उमंग लाती है ! !
हे साधु !
तुमने अपने आपको पूरी तरह
भुला दिया है
और जनगण में विलीन कर लिया है ! ! !
तेरी जय हो संन्यासी !
तुम चाहे पुराण-पंथी हो और
चाहे नव्यतावादी !
तुम हमारे सर्वस्व हो ! !

('दयानन्द चरितम्' से साभार, क्रमशः)

सत्संग

जिज्ञासा और समाधान

जिज्ञासा : वैदिक यज्ञ में 'स्विष्टकृत' आहुति मंत्र का क्या अभिप्राय है? कृपया मार्गदर्शन करें। *-श्रीमती मिनी स्वरूप, नई दिल्ली*

समाधान : वैदिक यज्ञ में 'स्विष्टकृत' आहुति अत्यन्त श्रेष्ठ और महत्त्वपूर्ण है। स्विष्टकृत आहुति मंत्र मनुष्य की कामना (इष्ट, उद्देश्य) को पूर्ण करने में सहायक है। मंत्र में 'यदस्य कर्मणो' में प्रयुक्त 'कर्म' शब्द का अर्थ यज्ञ या अग्निहोत्र न होकर उस 'पुरुषार्थ' से है, जिसकी कामना पूर्ति हेतु यज्ञकर्त्ता को अपेक्षा रहती है।

१. यह स्विष्टकृत आहुति एक ही है। महर्षि दयानन्द ने यज्ञ पद्धति में इसे अष्टाज्याहुतियों और पवमान आहुतियों के पूर्व स्थापित किया है। इस आहुति को वहीं देना चाहिए यदि हम महर्षि के अनुयायी अपने आप को कहते हैं तो इसका स्थान कदापि न बदलें।

२. यह प्रायश्चित्ताहुति मंत्र नहीं है। स्विष्टकृत आहुति मंत्र में प्रयुक्त 'प्रायश्चित्ताहुतीनां' पद बहुवचनांत है। इसका अर्थ है, परमेश्वर के प्रति प्रायश्चित्ताहुतियाँ दी जाती है। प्रायश्चित्ताहुतियों के मंत्र स्विष्टकृत आहुति से भिन्न हैं। अष्टाज्याहुतियों के मंत्र प्रायश्चित्ताहुति के रूप में माने गये हैं। (कात्या.सू.)

३. स्विष्टकृत आहुति में घृत और भात का ही प्रयोग करना मान्य है। लड्डू, पेड़ा इत्यादि मिष्ठान्न का प्रयोग करना मनमानी है।

यहाँ इस मंत्र का शब्दार्थ और भावार्थ दोनों ही दिये जा रहे हैं। आशा है, जिज्ञासु पाठक स्वच्छ और शान्त मन से इस अर्थ को हृदयंगम करेंगे और यदि वे कोई त्रुटि कर रहे हैं तो सुधार लेंगे।

मंत्र- यदस्य कर्मणोऽत्यरीरिचं यद्वा न्यूनमिहाकरम्। अग्निष्टत् स्विष्टकृद् विद्यात् सर्वं स्विष्टं सुहतं करोतु मे। अग्नये स्विष्टकृते सुहुतहुते सर्वप्रायश्चित्ताहुतीनां कामानां समर्द्धयित्रे सर्वान्नः कामान्त्समर्द्धय स्वाहा। इदमग्ने स्विष्टकृते इदन्न मम।।

शब्दार्थ- (यत् अस्य कर्मणः) यह जो मेरे द्वारा किया जाने वाला पुरुषार्थ है (अरीरिचम्) आवश्यकता से अधिक (यद्वा) अथवा (न्यून) आवश्यकता से कम (अकरम) न किया जाये। (तत्) उसे (स्विष्टकृत) उचित रूप से किया हुआ (विद्यात्) जानकर (सर्वम्) सबको (सुहुतम्) सफल (करोतु) करें। (अग्नये) प्रकाशस्वरूप (स्विष्टकृते) कामनाओं की पूर्ति करने वाले (सुहुतहुते) सफलता प्रदान करने वाले (सर्व प्रायश्चित्ताहुतीनां) आपके लिए ही यज्ञ कर्त्ता प्रायश्चित्त सम्बन्धी आहुतियाँ देते हैं। (कामानां समर्द्धयित्रे) कामनाओं की सिद्धि के लिए विख्यात (सर्वान्) सभी (नः) हमारी (कामान्) कामनाओं को (समर्द्धय) पूर्ण करें। (स्वाहा) मेरी आहुति सफल हो।

भावार्थ- हे परमपिता परमात्मन्! हम अपनी कामना की पूर्ति हेतु जो भी पुरुषार्थ करें, वह न आवयश्कता से अधिक हो और न कम। अर्थात् हमारा पुरुषार्थ सार्थक और सटीक हो। हे मार्गदर्शक, सर्वज्ञ, कामनाओं की पूर्ति में सक्षम प्रभु! आप हमारे उद्योग, पुरुषार्थ को सफलता प्रदान करने वाले हैं, आपके प्रति ही यज्ञकर्त्तागण प्रायश्चित्त आहुतियाँ दिया करते हैं, कामनाओं की सिद्धि के लिए भी आप विख्यात हैं। हे देवाधिदेव! आप हमारी कामना (इष्ट) को सफल बनाने की कृपा करें।

त्रुटि करना और माफी माँगना वैदिक सिद्धान्त नहीं है। स्विष्टकृत मंत्र क्षमा याचना न होकर 'त्रुटि न होने पाये' की प्रेरणा देता है। इसी भाव को गीतों और कविताओं में भी ढाला गया है। मंत्र का भावार्थ निम्नांकित गीत में भली प्रकार व्यक्त हुआ है-

इतनी शक्ति हमें देना दाता, मन का विश्वास कमजोर हो ना।
हम चलें नेक रस्ते पै हमसे, भूल कर भी कोई भूल हो ना।।

(संदर्भ ग्रन्थ : 'शंका समाजधान'-स्वामी मुनीश्वरानन्द सरस्वती)

(पृष्ठ 1 का शेष.....)

हीरालाल से.....

उसने इस्लाम धर्म को स्वीकार कर लिया है। गत अप्रैल जब मैं नागपुर में था वह मुझसे तथा अपनी माता से मिलने आया और उसने मुझे बताया कि किस प्रकार धर्मों के मिशनरी उसके पीछे पड़े हुए हैं। परमात्मा चमत्कार कर सकता है। उसने पत्थर दिलों को भी बदल दिया है और एक क्षण में पापियों को संत बना दिया है। यदि मैं देखता कि नागपुर की मुलाकात में और हाल की शुक्रवार की घोषणा में हीरालाल में पश्चाताप की भावना का उदय हुआ है और उसके जीवन में परिवर्तन आ गया है, तथा उसने शराब तथा व्यभिचार छोड़ दिया है तो मेरे लिए इससे अधिक प्रसन्नता की और क्या बात होती?

जीवन में कोई परिवर्तन नहीं

लेकिन पत्रों की खबरें इसकी कोई गवाही नहीं देती। उसका जीवन अब भी यथापूर्व है। यदि वास्तव में उसके जीवन में कोई परिवर्तन होता तो वह मुझे अवश्य लिखता और मेरे दिल को खुश करता। मेरे सब पुत्रों को पूर्ण विचार स्वातन्त्र्य हैं। उन्हें सिखाया गया है कि वे सब धर्मों को इज्जत की दृष्टि से देखें। हीरालाल जानता है कि यदि उसने मुझे यह बताया होता कि इस्लाम धर्म से मेरे जीवन को शांति मिली है तो मैं उसके रास्ते में कोई बाधा न डालता। किन्तु हममें से किसी को भी, मुझे या उसके २४ वर्षीय पुत्र को जो मेरे साथ रहता है उसकी कोई खबर नहीं है।

मुसलमानों को इस्लाम के सम्बन्ध में मेरे विचार ज्ञात हैं। कुछ मुसलमानों ने मुझे तार दिया है कि अपने लड़के की तरह मैं भी संसार के सबसे सच्चे धर्म इस्लाम को ग्रहण कर लूँ।

गाँधी जी को चोट

मैं मानता हूँ कि इन सब बातों से मेरे दिल को चोट पहुँचती है। मैं समझता हूँ कि जो लोग हीरालाल के धर्म के जिम्मेदार हैं वे एहतियात से काम नहीं ले रहे जैसा कि ऐसी अवस्था में करना चाहिए।

इस्लाम को हानि

हीरालाल के धर्म परिवर्तन से हिन्दू धर्म को कोई क्षति नहीं हुई उसको इस्लाम प्रवेश उस धर्म की कमजोरी सिद्ध होगा। यदि उसका जीवन पहले की भांति ही बुरा रहा। धर्म परिवर्तन मनुष्य और उसके सृष्टा से सम्बन्ध रखता है। शुद्ध हृदय के बिना किया हुआ धर्म परिवर्तन मेरी सम्मति में धर्म और ईश्वर का तिरस्कार है। धार्मिक मनुष्य के लिए विशुद्ध हृदय से न किया हुआ धर्म परिवर्तन दुःख की वस्तु है, हर्ष की नहीं।

मुसलमानों का कर्त्तव्य

मेरा मुस्लिम मित्रों को इस प्रकार लिखने का यह अभिप्राय है कि वे हीरालाल के अतीत जीवन को ध्यान में रखें और यदि वे अनुभव करें कि उसका धर्म परिवर्तन आत्मिक भावना से रहित है तो वे उसको अपने धर्म से बहिष्कृत कर दें तथा इस बात को देखें कि वह किसी प्रलोभन में न पड़े और इस प्रकार समाज का धर्म भीरु सदस्य बन जाये। उन्हें यह बात समझनी चाहिये कि शराब ने उसका मस्तिष्क खराब कर दिया है, उसकी सत्-असत् विवेक की बुद्धि खोखली कर डाली है। वह अब्दुल्लाह है या हीरालाल इससे मुझे कोई मतलब नहीं। यदि वह अपना नाम बदलकर ईश्वर भक्त बन जाता है तो मुझे क्या आपत्ति क्योंकि अर्थ तो दोनों नामों का वही है।

महात्मा गाँधी ने अपने लेख में हीरा लाल के इस्लाम ग्रहण करने पर न केवल अप्रसन्नता जाहिर की है अपितु उसे उसकी बुरा आदतों के कारण वापिस हिन्दू बन जाने की सलाह भी दी है। गाँधी जी द्वारा इस लेख में मुसलमानों द्वारा किये जा रहे तबलीग कार्य की निन्दा करने से बच रहे हैं परन्तु उनकी इस वेदना को उनके भावों द्वारा स्पष्ट रूप से समझा जा सकता है। *(क्रमशः, 'आर्य संदेश' नई दिल्ली से साभार)*

वाचनालय से

'न्याय की शवयात्रा शीर्षक से **'परोपकारी'** पाक्षिक (अजमेर) ने साम्प्रदायिक दंगा विरोधी विधेयक पर विचारोत्तेजक सम्पादकीय प्रकाशित किया है। पत्र के सम्पादक धर्मवीर लिखते हैं कि इस देश में सरकार ने कुछ परिभाषाएँ गढ़ ली हैं, जो कांग्रेसी और साम्यवादी कह देते हैं, वह धर्मनिरपेक्ष होता है। जो भाजपा शिवसेना वाले कहते हैं, वह घोर साम्प्रदायिक होता है।...सरकारी व्यवहार ने यह परिभाषा घोषित कर दी है कि बहुसंख्यक हिन्दू अपराधी है और अल्पसंख्यक कहा जाने वाला मुसलमान पीड़ित और निरपराध है। इसी मानदण्ड पर 'साम्प्रदायिक दंगा विरोधी विधेयक' की रचना की गयी है।

धर्मवीर लिखते हैं कि साम्प्रदायिक दंगा विरोधी विधेयक के माध्यम से सरकार हिन्दुओं को इस देश में मुसलमानों का दास बनाकर रखना चाहती है। यह कानून पुराने जजिया कानून की याद दिलाने वाला है। यह विधेयक सिद्ध करता है कि भारत सरकार न केवल गैर हिन्दू है, अपितु वह घोर हिन्दू विरोधी भी है।... बहुसंख्यक समूह द्वारा अल्पसंख्यक व्यक्ति या समूह के विरुद्ध गैरकानूनी काम करने पर दण्डनीय होगा, परन्तु इसके विपरीत कोई संगठन बहुसंख्यक के विरुद्ध गैरकानूनी कार्यवाही करता है, तो यह कानून उस पर कार्यवाही करने की अनुमति नहीं देता।.....इस कानून में अपराध का आधार कार्य नहीं बल्कि उसकी जाति और धर्म को बनाया गया है।...

इस कानून के माध्यम से अल्पसंख्यकों द्वारा बहुसंख्यक को लूटने की छूट दी गयी है। उनकी महिलाओं के उत्पीड़न का अधिकार दिया गया है। यह कानून संगठित रूप से बहुसंख्यक लोगों पर अत्याचार करने के लिये प्रेरित करता है। इस कानून का लाभ मुसलमान आतंकवादी और जिहाद करने वालों को भी मिलेगा। इस कानून के कारण वे अल्पसंख्यक होने के कारण कभी अपराधी होंगे ही नहीं। फिर उनको दण्डित कौन करेगा? धर्मवीर लिखते हैं कि आज के युग में यह सोचना कि 'यह व्यक्ति हिन्दू है, इसलिये अपराधी है तथा मुसलमान है, इसलिये निरपराध है' सभ्य समाज के स्वीकार्य होने योग्य बात नहीं है।

'सत्यार्थ सौरभ' मासिक (उदयपुर) ने 'एक मुकद्दमा' विस्तार के साथ प्रकाशित किया है जिसके तहत भारत के सर्वोच्च न्यायालय ने २६ अक्टूबर २००५ को गौरक्षा करना, उसका संवर्धन करना देश के प्रत्येक नागरिक का कर्त्तव्य घोषित किया है। इस निर्णय को वेबसाइट supremecourtcaselaw.com पर देखा जा सकता है। इस मुकद्दमे के दौरान गौ हत्या को आर्थिक आधार पर लाभदायक सिद्ध न कर पाने के बाद मुस्लिम कसाइयों ने तर्क किया कि गौ हत्या करना उनका धार्मिक अधिकार है। कोर्ट ने कहा कि अगर ये इनका धार्मिक अधिकार है, तो इतिहास में पता करो कि किस-किस मुस्लिम राजा ने अपने इस धार्मिक अधिकार का प्रयोग किया?

जब पुराने दस्तावेज निकाले गये तो उससे पता चला कि भारत में जितने भी मुस्लिम राजा हुए एक ने भी गाय का कत्ल नहीं किया। इसके उलट कुछ राजाओं ने गायों के कत्ल के खिलाफ कानून बनाये। उनमें से एक का नाम था बाबर। बाबर ने अपनी पुस्तक बाबरनामा में लिखवाया है कि मेरे मरने के बाद भी गाय का कत्ल न करने का कानून जारी रहना चाहिए, तो उसके पुत्र हुमायूँ ने भी उसका पालन किया और उसके बाद जितने भी मुस्लिम राजा हुए सबने इस कानून का पालन किया, औरंगज़ेब सहित। दक्षिण भारत में एक राजा था हैदर अली। टीपू सुल्तान का बाप। उसने एक कानून बनवाया था कि अगर कोई गाय की हत्या करेगा, तो हैदर उसकी गर्दन काट देगा। हैदर अली ने ऐसे सैकड़ों कसाइयों की गर्दन काटी थी। फिर हैदर अली का बेटा आया, टीपू सुल्तान। टीपू सुल्तान के समय में कोई भी अगर गाय काटता था, तो उसका हाथ काट दिया जाता था। मुकद्दमे के वादी राजीव भाई ने कोर्ट से कहा कि आप हमें आज्ञा दें, तो हम ये कुरान शरीफ, हदीस आदि जितनी भी पुस्तकें हैं, कोर्ट में पेश कर सकते हैं। आपको पता चलेगा कि इस्लाम की किसी भी पुस्तक में नहीं लिखा है कि गाय का कत्ल करो। हदीस में तो लिखा हुआ है कि गाय की रक्षा करो क्योंकि वो तुम्हारी रक्षा करती है। पैगम्बर मुहम्मद साहब का स्टेटमेंट है कि गाय अबोल जानवर है, इसलिये उस पर दया करो। एक जगह लिखा है कि गाय का कत्ल करोगे, तो दोजख में भी जमीन नहीं मिलेगी।

राजीव भाई ने कोर्ट से कहा, अगर कुरान ये कहती है, मुहम्मद साहब ये कहते हैं, हदीस ये कहती है, तो फिर गाय के कत्ल का धार्मिक अधिकार कब से हुआ। अन्ततः कोर्ट ने एक महीने का परमीशन दिया, उस दस्तावेज के ढूंढने के लिये जिसके अनुसार गाय का कत्ल करना इस्लाम का मूल अधिकार है। एक महीना बीत गया। कोई दस्तावेज़ नहीं मिला और कोर्ट ने अपने निर्णय सुना दिया।

'स्वस्ति पन्था' मासिक (हरिद्वार) में प्रकाशित 'ब्रह्माण्ड की खोज और महर्षि दयानन्द' शीर्षक मनमोहन कुमार आर्य के लेख के अनुसार ईश्वर स्थूल पदार्थ है ही नहीं, अतः वैज्ञानिकों द्वारा किये जाने वाले अध्ययन की सीमाओं से बाहर होने के कारण वह ईश्वर को जान नहीं पा रहे हैं। एक न एक दिन उन्हें अपना दृष्टिकोण बदलना ही होगा। उन्हें वेद, उपनिषद व दर्शन के आचार्यों के, बुद्धि व युक्तिसंगत विचारों को सुनना व समझना होगा। उन पर निष्पक्ष चिन्तन करने पर वे पायेंगे कि जीवात्मा की भांति एक चेतन, सर्वव्यापक, सर्वशक्तिमान तत्व और भी है। उसे समझ लेने पर ही वह यथार्थ ज्ञानी कहला सकेंगे।

शुभाकांक्षा

'आर्य्य लोक वार्ता' का नवम्बर, २०१३ अंक पठनीय ही नहीं, संग्रहणीय भी है। इस सुभग अंक में तत्कालीन उर्दू मासिक 'आर्य समाचार' में मिर्ज़ा ग़ालिब के ज़माने की शुद्ध एवं मुश्किल उर्दू ज़बान में प्रकाशित महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती के निधन के दुखद समाचार के अंश देवनागरी लिपि में प्रस्तुत करके आपने वास्तव में बड़ा खोजपूर्ण कार्य किया है। उक्त दुखद समाचार बाँचकर आज भी मन को ज़बरदस्त ठेस पहुँचती है। दयानन्द जी का देहावसान ३० अक्टूबर १८८३ ई. को दीपावली के दिन हुआ था। मेरी गणना के अनुसार उस दिन मंगलवार था।

विख्यात उपन्यास 'झाँसी की रानी' से उद्धृत अंश 'जब राज्य हड़पने का पत्र झाँसी पहुँचा' एक ज़माने के बाद पुनः पढ़कर अभिभूत हुआ। 'काव्यायन' के अन्तर्गत महर्षि दयानन्द जी पर श्री अनूप शर्मा के घनाक्षरी छन्द भी खूब हैं। नवल वर्ष में आपको, मिलें नवल उपहार। हर्ष-सुमन खिलते रहें, सपने हों साकार।।

-डा.मिर्ज़ा हसन नासिर

जी-०२, लोरपुर रेजीडेन्सी, न्यू हैदराबाद, लखनऊ

***

'आर्य लोक वार्ता' का अक्टूबर व नवम्बर २०१३ का अंक मिला। पूर्व की भांति दोनों ही अंकों में पठनीय एवं संग्रहणीय सामग्री मिली। अक्टूबर अंक में श्री लालबहादुर शास्त्री और नवम्बर अंक में स्वामी दयानन्द सरस्वती के जीवन काल के संस्मरण नए ज्ञान-शिखर तक ले जाते हैं। भाई अमृत खरे द्वारा वेद की ऋचाओं का हिन्दी अनुवाद तथा उनका 'वाचनालय से' स्तम्भ निःसन्देह उनके अथक परिश्रम के गवाह हैं। 'काव्यायन' के कवियों द्वारा रसमय काव्य धारा का प्रवाह किया गया है। आपके सम्पादकीय तो लाजवाब होते ही हैं, साथ ही नए विचार-बिन्दुओं के कारण साहित्य की अमूल्य निधि बन गए हैं। मेरी प्रार्थना है कि 'आर्य लोक वार्ता' दिन प्रतिदिन उन्नति के शिखर पर पहुँचे।

-उमेश राही

मोती नगर, लखनऊ

***

आर्य लोक वार्ता नवम्बर अंक प्राप्त हुआ। प्रथम पृष्ठ पर प्रकाशित 'महर्षि दयानन्द के निधन का समाचार' तत्कालीन समाचार पत्र से आर्य समाज मेरठ ने जन समुदाय के अवलोकनार्थ कुछ अंशों को प्रस्तुत कर श्रद्धांजलि अर्पित की। बहुत ही सराहनीय कार्य है क्योंकि अधिकांश पाठक व पाठिकाओं को ऐसी जानकारी नहीं थी। सम्पादकीय में भविष्य की अगवानी का सुन्दर दृष्टान्त देकर आपने स्पष्ट किया कि नरेन्द्र मोदी ही वास्तव में प्रधानमंत्री पद के अधिकारी दृष्टिगत होते हैं। 'वेदांजलि' में पं.शिव कुमार शास्त्री द्वारा प्रस्तुत मंत्र शिक्षा देता है कि अपने देश को स्वाधीन रखने में किन किन गुणों की आवश्यकता होती है। शास्त्री जी ने बहुत अच्छी प्रकार मंत्र की व्याख्या की है। 'वाचनालय से' में श्री अमृत खरे जी के खोजपूर्ण विचार प्रकाश में आये हैं। आनन्द कुमार का धारावाहिक 'मनुष्य का विराट रूप' विशेष शिक्षाप्रद होता है। कोई भी इन शिक्षाओं को धारण कर ले तो उसका इहलोक और परलोक दोनों संवर जाये। 'काव्यायन' की सभी कविताएं महत्वपूर्ण हैं फिर भी उमेश राही के मुक्तक सर्वोपरि हैं।

आचार्य ओजोमित्र शास्त्री ने आर्य लोक वार्ता की विशेषताओं पर प्रकाश डाला है जो सराहनीय कदम है। आर्य लोक वार्ता एक ऐसी पत्रिका है जो हमें सभी पाठकों को घर बैठे एक दूसरे के विचारों से अवगत कराती है, विचारों से सहमति प्राप्त कराती है। यह अच्छा खासा स्वाध्याय है और हमारा पथ प्रशस्त करती है। अतः मैं चाहूंगी यह पत्रिका दिन दुगनी रात चौगुनी तरक्की करे और हम सबका सतत् पथ प्रशस्त होता रहे।

-प्रमोद कुमारी

एम.एस.३७, सेक्टर डी, अलीगंज, लखनऊ

***

आर्य लोक वार्ता नवम्बर १३ का अंक प्राप्त हुआ। गुणात्मक दृष्टि से निरंतर प्रगति के पथ पर अग्रसर होता हुआ देखकर हार्दिक प्रसन्नता होती है। मैं सम्पूर्ण 'आर्य लोक वार्ता परिवार' को बधाई देता हूँ, अभिनन्दन करता हूँ, पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति के लिये परमात्मा से कामना करता हूँ। पत्रिका की हर रचना आकर्षक है- 'सम्पादकीय', 'वेदांजलि', 'जिज्ञासा और समाधान' आदि सभी रचनायें मार्गदर्शन करने वाली हैं। आर्य लोक वार्ता अधिक से अधिक स्वाध्यायशील व्यक्तियों के पास पहुंचे, ऐसी कामना है।

-डॉ.सत्य प्रकाश

प्रकाश होम्यो हाल, सदरबाजार, सण्डीला, हरदोई

***

'आर्य लोक वार्ता' की मैं नियमित पाठिका हूँ। अपने पाठकों को नित्य नवीन जानकारी देने एवं उनकी जिज्ञासाओं को शान्त करने के कारण यह पत्र अपने प्रकाशन काल से लेकर आजतक अपनी लोकप्रियता लगातार बढ़ाये हुए है। इसकी एक महान् विशेषता- इसमें प्रतिमास प्रकाशित होने वाला 'विनय पीयूष' के रूप में वेदमंत्रों का काव्यानुवाद है। वेद ऋचाएँ, संस्कृत से अनभिज्ञता एवं रूढ़िवादी संस्कारों के कारण जन साधारण की समझ से परे मानी जाती हैं किन्तु यह श्री अमृत खरे की लेखनी का कौशल है कि उनके गीतात्मक सरल और हृदयस्पर्शी काव्यानुवाद वेदवाणी को जन जन तक पहुँचाने का उपयुक्त माध्यम सिद्ध हो रहे हैं।

अनुवाद का कार्य बेहद कठिन है। किसी भी शब्द को समझने हेतु उसकी अन्तरात्मा की गहराई में जाकर देखना होता है उसे भावपक्ष में किसी भी प्रकार की त्रुटि न हो। यदि कोई व्यक्ति ऐसा अनुवाद करे जो मंत्र के मूलभाव को प्रकाशित न कर सके, वरन् उसे हास्यापद बना दे, तो वह कवि और कविता अर्थहीन हो जाती है। कविश्रेष्ठ अमृत खरे ने वेदमंत्र के काव्यानुवाद में हमेशा इस बात का ध्यान रखा है कि उनका अनुवाद मंत्र की मूल भावना को उद्घाटित करने में सक्षम हो। ऐसे उत्कृष्ट कवि और काव्यानुवादक को कोटि कोटि बधाई और साधुवाद! साथ ही 'आर्य लोक वाता' की प्रगति और शुभकामनाओं के साथ-

-सुधा चौधरी

पूर्व प्राचार्या, आर्य कन्या महाविद्यालय, हरदोई

***

'आर्य लोक वार्ता' (अंक ५) २०१३ मिला। 'सन् १८८३ की काली दीवाली' शीर्षक के अन्तर्गत महर्षि दयानन्द सरस्वती के यशःशेष होने से सम्बन्धित मेरठ के तत्कालीन उर्दू मासिक पत्र 'आर्य समाचार' का अंश पढ़कर अभिभूत हो उठा। उस महापुरुष के विषय में उल्लिखित पंक्तियों ने झकझोर दिया, विवश कर दिया उसकी महिमा को जानने, समझने और बारम्बार चिन्तन-अनुचिन्तन करने के लिए। ऐसी विशिष्ट सामग्री आज के पाठकों को परोसने के लिए हार्दिक साधुवाद। 'भविष्य की अगवानी' शीर्षक आपका सम्पादकीय आपके भविष्य द्रष्टा स्वरूप को प्रस्तुत करता और आपकी विद्वत्ता को उजागर करता है। 'स्वतंत्रता संग्राम' में आर्य समाज की भूमिका विषयक लेख अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। 'वेदांजलि' का मंत्र राष्ट्रोन्नयन के लिए अनुकरणीय और आचरणीय है। 'मनुष्य का विराट रूप' शीर्षक लेख हमें सन्मार्ग की ओर प्रेरित करता है। 'झांसी की रानी' विषयक प्रस्तुति भी बड़ी प्ररेणा प्रद है। महाकवि अनूप के छंद महर्षि दयानन्द के गौरव को जीवन्त कर देने में पूर्ण समर्थ हैं। संक्षेपतः सारी सामग्री स्तरीय है। ऐसे उदात्त विचारयुक्त पत्र सम्पादन के लिए एक बार पुनः हार्दिक बधाई।

-उमाशंकर शुक्ल 'शितिकिण्ठ'

'वाणी निलय' ७८, त्रिवेणी नगर, प्रथम, डालीगंज रेलवे क्रासिंग, लखनऊ-२२६०२०

***

'आर्य लोक वार्ता' नवम्बर अंक में

सन् १८८३ की दीपावली को महर्षि दयानन्द के निर्वाण विषयक आलेख उद्धृत करना अतीव समसामयिक एवं श्लाघनीय लगा। इससे स्वामी की सार्वजनीनता तथा सर्वकालिकता स्वयंसिद्ध है तथा वे आज और अधिक प्रासंगिक व सम्माननीय हैं क्योंकि जग को आलोकित करने हेतु उन्होंने आत्मदीप की आभा बिखेर दी थी। महामानव को सश्रद्धा नमन। स्वतंत्रता संग्राम में आर्य समाज की सक्रिय भागीदारी स्तुत्य रही है तथा यह अद्भुत सत्य है कि तत्कालीन स्वतंत्रता सेनानियों को सद्प्रेरणा व मार्ग दर्शन स्वामी जी के व्यक्तित्व-कृतित्व से मिला था। आचार्य दीपंकर का तद्विषयक लेख प्रभावपूर्ण है। आचार्य पं.ओजोमित्र शास्त्री जी ने 'आर्य लोक वार्ता की विशेषताएँ' के माध्यम से उत्कृष्ट एवं शालीन विचार प्रस्तुत किए हैं, इससे सुधी पाठकों के साथ मनीषियों की गुण ग्राहकता वन्दनीय है। 'कालजयी काव्य' के अन्तर्गत महाकवि अनूप शर्मा के सरस छन्दों से हृदय रसाप्लावित हो गया। महर्षि दयानन्द के निर्वाणपर्व पर पुण्य स्मरण मननीय है। श्री अनूप शर्मा सीतापुर के निवासी थे किन्तु यह तथ्य सभी को सहज ज्ञात नहीं है। आपसे अनुरोध है कि कालजयी कवि का संक्षिप्त परिचय भी दिया करें जिससे और भावात्मकता से जुड़ा जा सके। सम्पादकीय के माध्यम से आपने नरेन्द्र मोदी में सुशासन, स्वस्थ जनतंत्र तथा सशक्त राष्ट्र की भावी छवि के दर्शन किए हैं जो कदाचित मिथ्या गर्वोक्ति नहीं है। दूसरे सरदार पटेल के रूप में यदि उनका कुशल नेतृत्व मिले तो कदाचित् भारत के विश्व गुरु बनने का स्वप्न फलित हो सके। 'काव्यायन', 'वाचनालय से', 'शुभाकांक्षा' तथा धारावाहिक चिन्तन शृंखलाएँ पूर्ववत् स्तरीय सद् साहित्य प्रदान करने में सन्नद्ध हैं। विनम्र निवेदन के रूप में-

मनप्राणों को निर्मल करती, वेद-ज्ञान की वाणी है।
ओम-सुप्रभा से अनुप्राणति, आत्मज्योति कल्याणी है।
मानव होकर भी अज्ञानी! रूप बदलता क्षण-क्षण में।
आवाहन करले उस प्रभुका, विद्यमान जो कण-कण में।।

-गौरीशंकर वैश्य 'विनम्र'

११७, आदिल नगर, पो.-विकास नगर, लखनऊ

***

अक्षर लोक

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने तर्क संगत ढंग से घोषणा की है- वेद ही ईश्वरीय ज्ञान है! इस घोषणा को पोषित करते शब्द महर्षि के प्रत्येक ग्रन्थ में, विशेषकर सत्यार्थ प्रकाश में, जगह जगह मोती मुक्ता की तरह टंके हुए हैं। श्रीमती सरोज आर्या ने 'सत्यार्थ प्रकाश' के सप्तम, त्रयोदश और चतुर्दश समुल्लास को आधार बना कर **'वेद ही ईश्वरीय ज्ञान है'** शीर्षक पुस्तक की रचना की है और जन-साधारण के लिये विषय-विशेष को सहज रूप में एक स्थान पर उपलब्ध कर दिया है।

सरोज आर्या लिखती हैं कि अन्य धर्मग्रन्थों की तुलना में वेद को ईश्वरीय ज्ञान मानने की अनेक तर्कपूर्ण, बुद्धिगम्य और न्यायोचित कयौटियाँ हैं, उन पर विचार करना आवश्यक है। महर्षि के मत को स्वीकार करते हुए लेखिका के शब्द हैं कि ईश्वरीय ज्ञान तो सृष्टि के आदि में ही प्रकट होना चाहिए। सृष्टि के आदि में मानवोत्पत्ति के साथ ही ईश्वरीय ज्ञान के प्रकाश का दावा वेद के सिवा कोई नहीं कर सकता। यदि हम वेद का आविर्भाव सृष्टि के आरम्भ में न मानें तो भी वह ईश्वरीय ज्ञान का दावा करने वाले अन्य सभी ग्रन्थों से पहले का है।

वेद के अतिरिक्त सभी धर्मग्रन्थ काफी अर्वाचीन हैं। रामायण त्रेतायुग में और महाभारत द्वापर युग के अन्त में प्रणीत हुई। महात्मा बुद्ध और महावीर का जन्म लगभग २५०० वर्ष पूर्व हुआ था, उन्हीं के साथ बौद्ध और जैन धर्म का उदय हुआ। बाइबिल लगभग २००० वर्ष पूर्व जन्मे ईसामसीह के उपदेशों का उनके शिष्यों द्वारा किया गया संकलन है। कुरान १४०० वर्ष पूर्व मुहम्मद साहब के माध्यम से अस्तित्व में आयी। लेखिका लिखती हैं कि इतने विलम्ब से प्रकट होने वाला ज्ञान किस प्रकार ईश्वरीय ज्ञान सिद्ध हो सकता है?

सुश्री आर्या लिखती हैं कि परब्रह्म परमेश्वर देश, काल, वस्तु आदि के परिच्छेद से रहित एक परिपूर्ण तत्व है, इसलिये उसका ज्ञान भी देश-काल से परिछिन्न नहीं होता। वह सदा एकरूप अनादि और अनन्त है। यदि ऐसा नहीं होता तो मनुष्य मात्र का मार्गदर्शन नहीं हो सकता है। जो ज्ञान किसी देश व काल में सीमित रह जाता है, वह ईश्वरीय ज्ञान होने का दावा नहीं कर सकता है। देशभेद व कालभेद उन पदार्थों का आश्रय पाते हैं, जो कभी और कहीं उद्भव में आते हैं। वेद शाश्वत ब्रह्म का रूप है। देश काल से असम्पृक्त ब्रह्म का ज्ञान वेद उसी के समान नित्य है। ईश्वरीय ज्ञान का दावा करने वाले अन्य ग्रन्थों में यह बात नहीं।

पुस्तक के अनुसार वेद की रचना बुद्धिपूर्वक की गयी प्रतीत होती है, इसलिये किसी बुद्धिमान सत्ता को ही उनका कारण मानना होगा। वेद में ऐसा कुछ नहीं है, जो अनर्गल, असत्य, अनावश्यक, अमानवीय या अव्यावहारिक हो। वैदिक ज्ञान सृष्टि नियमों और विज्ञान के अनुकूल है। वेद के मंत्रों से स्पष्ट है कि वेद और सृष्टि, दोनों एक ही परमेश्वर की रचना हैं, अतः वेद में सृष्टिक्रम के विरुद्ध कोई बात नहीं है। लेखिका लिखती हैं कि वैदिक धर्म के सिद्धान्तो तथा मान्यताओं के वैज्ञानिक आधार के कारण ही भारतीय वैज्ञानिकों पर वैसे अत्याचार कभी नहीं हुए जैसे बाइबिल आदि को ईश्वरीय ज्ञान मानने वाले वैज्ञानिकों पर हुए।

गैलीलियो द्वारा 'पृथ्वी गोल है और सूर्य की परिक्रमा करती है' के सिद्धान्त का प्रतिपादन करने पर उसे १० वर्ष के लिए कारागार की सजा दी गयी। इटली के सुप्रसिद्ध वैज्ञानिक ब्रूना द्वारा पूर्वोक्त सिद्धान्त का समर्थन करने पर उसे कई बार कारागार की सजा दी गयी और अन्त में उसे जीवित जला दिया गया।

सरोज आर्या मानती हैं कि ईश्वरीय ज्ञान किसी समूह विशेष के लिये नहीं होना चाहिए। कुरान की आयत (मं.३/सि.११/सू.१०/आयत ५७) 'शिक्षा और दया वास्ते मुसलमानों के' से स्पष्ट है कि कुरान की शिक्षा और दया वर्ग विशेष अर्थात मुसलमानों के हिताहित तक सीमित है। वेद की शिक्षा सबको समान रूप से उपलब्ध है और सबके लिए उपादेय है। लेखिका का मानना है कि ईश्वरीय ज्ञान में लौकिक इतिहास नहीं हो सकता। इतिहास होगा, तो नित्यत्व नहीं होगा। वेदों में लौकिक इतिहास नहीं है।

कुरान की एक आयत है, 'हमने कुरान को अरबी में नाज़िल किया, ताकि तुम समझ सको' (मं.३/सि.१३/सू.१३/आयत ३७, ४०) अरबी भाषा निश्चित रूप से एक देश विशेष की भाषा है, इससे ईश्वर पर पक्षपात का आरोप लग सकता है। सुश्री आर्या लिखती हैं कि न्यायकारी परमेश्वर ने वेदरूपी ज्ञान संस्कृत भाषा में प्रदान किया, जो मूल रूप से सबकी भाषा थी।

ईश्वरीय ज्ञान में समस्त ज्ञान-विज्ञान होना चाहिए, सब सत्य विद्याओं का समावेश होना चाहिए, यह मानवमात्र के लिए लाभकारी होन चाहिए। वेद इस कसौटी पर खरे उतरते हैं। सरोज आर्या लिखती हैं कि विश्व के अनेक धर्म ग्रन्थ मनुष्य को हिन्दू, मुसलमान, सिक्ख, ईसाई, जैन, बौद्ध आदि तो बना सकते हैं लेकिन 'मनुर्भव जनया दैव्यं जनम्' (ऋग्वेद १०/५३/६) अर्थात् मनुष्य बनो और दिव्य संतानों को उत्पन्न करो का उपदेश तो केवल वेद में ही मिलता है।

'वेद ही ईश्वरीय ज्ञान है' ग्रन्थ की भाषा सरल, सहज और विचारोत्तेजक है। १६० पृष्ठीय पेपरबैक प्रस्तुति निर्दोष और आकर्षक है। ग्रन्थ को स्वामी सेवानन्द सरस्वती ने प्रकाशित किया है। पुस्तक का कोई विक्रय मूल्य नहीं है। इसे 'वैदिक धर्म प्रचार प्रसार न्यास', ४८७, नमक की मण्डी, किशनपोल बाजार, जयपुर (राजस्थान) से प्राप्त किया जा सकता है। •

www.thearyasamaj.org

धारावाहिक-(39)

मनुष्य का विराट् रूप

-आनन्दकुमार-

दान-परोपकार-सेवा

१-माघ का महादान

संस्कृत के महाकवियों में शिशुपालवध रचयिता माघ का स्थान बहुत ऊँचा है। राजशेखर ने उनके सम्बन्ध में कहा है कि माघ मास के समान माघ कवि का नाम सुनकर किस विद्वान् की कँपकँपी नहीं होती-'माघेनेव च माघेन कम्पः कस्य न जायते।' इनके जीवन की एक उल्लेखनीय घटना है। यह घटना उस समय की है जब धनी माघ अपनी दानशीलता के कारण दीन हो चुक थे।

एक दिन मनस्वी महाकवि अपने घर के बाहर बैठे हुए अपने काव्य का नवम सर्ग लिख रहे थे। उसी समय अवन्तिका से एक दरिद्र ब्राह्मण ने आकर अपनी कन्या के विवाह के लिए उनसे आर्थिक सहायता की याचना की। माघ ने कहा-भाई, मैं तुम्हें क्या दूँ, कहाँ से दूँ; मेरे पास तो कुछ भी नहीं बचा है- मैं स्वयं कई दिनों से भूखा हूँ।

याचक निराश होकर वहाँ से चलने लगा। सहृदय कवि से यह देखा नहीं गया। उन्होंने उसे रोककर पूछा- विप्रदेव, कन्या-विवाह के लिए आपको कितना धन चाहिए?

ब्राह्मण ने कहा- सौ मुद्रायें मिल जायँ तो किसी प्रकार काम चल जायगा।

उसे बैठने का आदेश देकर माघ घर के भीतर गये। वहाँ उन्होंने चारो ओर दृष्टि दौड़ाई। घर में कोई मूल्यवान वस्तु शेष नहीं थी। एक खाट पर उनकी पत्नी पड़ी सो रही थी। उसके हाथों में स्वर्ण के कंकण थे। घर की सम्पन्नता के वही अन्तिम स्मारक थे। संभवतः उनके विवाह की वही अन्तिम स्मृति-चिन्ह थे जिन्हें स्त्री ने बड़े यत्न से सुरक्षित रखा था। माघ ने चुपचाप पत्नी के पास जाकर उसके एक हाथ का आभूषण निकाल लिया। उसे लेकर वे चलने ही वाले थे, इतने में स्त्री की आँख खुल गई। उसने चौंककर पूछा-कौन है?

माघ ने कहा--चोर।

स्त्री ने कहा--चोर या स्वामी?

माघ--इस समय मैं स्वामी नहीं, चोर हूँ। देखो, मैं तुम्हारा कंकण चुराये जा रहा था--तुम मुझे जो दण्ड देना चाहो दे सकती हो; मैंने चोरी की है।

कवि-पत्नी ने कहा--चोरी तो दूसरे की वस्तु की होती है। मेरा तो सर्वस्व आपका है--मैं आपको चोर कैसे मानूँ!

माघ किंकर्त्तव्यविमूढ़-से होकर खड़े हो गये। उनकी मनोव्यथा उनके चेहरे पर छाई हुई थी। पत्नी समझ गई कि वे परिहास नहीं कर रहे हैं। उसने स्वामी की उदासी का कारण पूछा। माघ ने कहा--गृहिणी, हमारे द्वार पर एक दीन प्राणी आया है। धन के अभाव में उसकी युवती कन्या अभी तक अविवाहित पड़ी है। उसने बड़ी आशा के साथ मुझसे सौ मुद्राओं की याचना की है। मैं उसे कैसे निराश करूँ? यह तो उस घर का अपमान है जहाँ से कभी कोई निराश होकर नहीं लौटा। मैंने यह सोचा कि तुम्हारा एक कंकण उसे दे दूँ तो उसका काम चल जायगा। उसे बेचकर वह सौ मुद्रायें पा जायगा। इस प्रकार एक अभागिनी कन्या सौभाग्यवती बन जायगी। तुम्हारी स्वीकृति हो तो मैं इस कंकण को दान कर दूँ। इसे देने में तुम्हें कष्ट हो तो तुम मुझे स्पष्ट बता दो।

पति की बातें सुनकर स्त्री ने अपने दूसरे हाथ का कंकण भी निकाल उन्हें देते हुए कहा--स्वामी, एक से उसका काम नहीं चलेगा, इसलिए इसे भी सहर्ष दे दीजिए।

माघ ने कहा--इस एक से ही सौ मुद्रायें मिल जायँगी, दूसरा क्यों देती हो?

पत्नी बोली--दूसरा इसलिए देती हूँ कि वह धूमधाम से अपनी कन्या का विवाह करे। इसे आप मेरी ओर से उसे दे दीजिये।

नारी का मुख-मंडल हर्ष और स्वात्माभिमान से दमक रहा था। माघ ने दूसरा कंकण भी ले लिया। दोनों को प्रसन्नतापूर्वक दान करके महाकवि ने उस याचक से कहा--विप्रवर, इन्हें बेचकर आप कम-से-कम दो सौ मुद्रायें पा जायँगे। उनसे अपनी कन्या का विवाह सुयोग्य रीति से कीजिए। हमारी शुभ-कामनायें आपके साथ हैं।

ब्राह्मण ने दान-वस्तुओं को कृतज्ञता पूर्वक स्वीकार कर लिया। चलते समय उसने माघकवि से कहा--आपका यह काव्य निश्चय ही संसार में आपको अमर कर देगा।

माघ ने आश्चर्यचकित होकर पूछा--आपने बिना देखे ऐसा कैसे कहा?

ब्राह्मण बोला--आप जब भीतर थे, मैंने उस थोड़े समय में इसे उलट-पलट कर देख लिया है; अद्भुत रचना है। आपका परिश्रम आपको गौरव प्रदान करने वाला है। मेरा आशीर्वाद सत्य होगा।

यह कहकर ब्राह्मण वहाँ से चला गया। माघ पुनः काव्य रचना में तल्लीन हो गये। उनकी पत्नी भीतर से दोनों की बातचीत सुन चुकी थी। याचक के जाने के बाद उसने बाहर आकर पति से कहा--जान पड़ता है, वह व्यक्ति भी कोई उदार विद्वान् है जो आप ही की भाँति आज दरिद्र हो गया है। माघ ने कहा--सचमुच मेरे ही जैसा कोई आपत्ति-ग्रस्त प्राणी है, उसका परिचय पूछना भूल गया। महाकवि ने उसकी बहुत खोज की, परन्तु वह नहीं मिला।

२-दान का महत्त्व

माघ ने जो किया, वही प्रत्येक सत्पुरुष का कर्त्तव्य है। कालिदास के शब्दों में--'आपन्नार्तिप्रशमनफलाः सम्पदो ह्युत्तमानाम्'--मेघदूत। अर्थात्, विपत्ति में पड़े हुए मनुष्य के दुःख को दूर करना ही उत्तम पुरुषों की सम्पत्ति का फल है। भारतीय इतिहास से इस प्रकार के अनेक उदाहरण दिये जा सकते हैं। दान-परोपकार हमारी संस्कृति और सभ्यता के विशेष अंग हैं। वेद का आदेश है--'शतहस्तं समाहर सहस्र हस्तं संकिर'--ऋग्वेद। अर्थात्, सैकड़ों हाथों से इकट्ठा करो और सहस्र-हाथों से बाँटो। प्राचीन काल के श्रेष्ठ पुरुष यही मानते थे कि मेरे पास देने के लिए पर्याप्त सामग्री हो, मुझे नित्य अनेक अतिथियों की सेवा का सुअवसर प्राप्त हो; मेरे पास याचक आयें, किन्तु मुझे कहीं न मांगना पड़े--'बहु देयं च नोऽस्तु। अतिथींश्च लभेमहि याचितारश्च नः सन्तु मा च याचिष्म कंचन।' शास्त्रकारों के मत से यदि शत्रु भी अपने घर पर आ जाये तो उसके लिए कुछ भी अदेय नहीं है--"शत्रावपि गृहायाते नास्त्यदेयं तु किंचन"-पद्मपुराण। शत्रु की बात तो जाने दीजिये, हिन्दू शास्त्रों में तो मृतकों के लिये भी पिंड-दान, तर्पण का विधान है।

(मनुष्य का विराट् रूप से साभार क्रमशः)

विवेकानन्द की १५०वीं जयन्ती पर

जीवन जीने का वास्तविक सूत्र

उठो, जागो, बढ़ो; जब तक लक्ष्य प्राप्त न कर लो!

-डॉ. शान्तिदेव बाला-

सतयुग का एक आश्रम-महर्षि अरुण के पुत्र उद्दालक का विश्वजित यज्ञ अभी अभी सम्पन्न हुआ है। अब वह दान कर रहे हैं। दान में वे ऐसी गौओं का दान कर रहे हैं, जो एकदम बूढ़ी हो चुकी हैं। विश्वजित यज्ञ की मुख्य कामना थी विश्व को जीतने की, विश्वस्वामी बनने की और दान इतना सारहीन निरर्थक गायों का। उसके होनहार तरुण पुत्र नचिकेता के मन में तो हलचल मच गई, इस दुहरे मापदण्ड के व्यवहार से। इच्छा विश्व स्वामी होने की और दान बूढ़ी गायों का! नचिकेता का शाब्दिक अर्थ ही है-'नहीं भाई नहीं'-उसने पिता से कह ही दिया, दान में तो पवित्र और बहुमूल्य वस्तुएँ देनी चाहिए, आप मुझे ही दान में दे दीजिये। किसे देंगे आप मुझे? पिता झुंझला गया, क्रोधित हो उठा-तुझे, जा मर, परे हो, तुझे मैं मृत्यु को देता हूँ। नचिकेता भी युवा शक्ति का प्रतीक, उठा और चल दिया। जा पहुँचा मृत्यु के, यम के घर। यम घर में नहीं थे, मृत्यु जीवन का मूल सत्य है ही नहीं, वह तो जीवन चक्र के परिवर्तन का एक ठहरा हुआ क्षण है, तो मृत्यु थी ही नहीं। खैर, नचिकेता भी धुन का पक्का, तीन दिन-रात द्वार के बाहर ही भूखा प्यासा बैठा रहा। यम को आना ही था घर। देखा एक युवा बालक बाहर ही भूखा प्यासा बैठा है। क्या चाहता है? बोल, तरुण तुझे मैं तीन वर दूंगा, बोलो क्या चाहते हो? नचिकेता ने पहला वर पिता की क्रोध शान्ति का, दूसरा वर पिता आखिर किस स्वर्ग को पाना चाहते थे, तो स्वर्ग होता क्या है, मांग लिये। दे दिये यम ने। अब अन्तिम वर- नचिकेता जानना चाहता है यह मृत्यु होती क्या है, जीवन जीने का वास्तविक सूत्र क्या है? यम ने अथाह धन संपदा, चिर स्थायी यौवन, अनन्त काल तक समस्त भोग विलास की सामर्थ्य, समस्त अभीष्टों की प्राप्ति सब कुछ देना चाहा, पर नचिकेता तो अपने लक्ष्य के प्रति एकदम समर्पित, बिना विचलित हुए केवल जीवन मृत्यु का रहस्य जानना चाहता है और जीवन जीने का सच्चा सूत्र ही पाना चाहता है। देना पड़ा साक्षात मृत्यु के देवता यमराज को जीवन जीने का सबसे सच्चा, सशक्त सारगर्भित सूत्र-

उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान्निबोधयत्। क्षुरस्य धारा निशिता दुरत्यया दुर्गं पथस्तत्कवयो वदन्ति।।

उठो, जाग जाओ, सावधान हो जाओ, उचित सोचविचार कर सही जानकारी प्राप्त करो, और सही लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए प्रतिबद्ध होकर उठ खड़े हो- यह जानते हुए भी कि लक्ष्य प्राप्त करने का मार्ग अत्यन्त दुस्तर है। जैसे छुरे की तीक्ष्ण धार पर चलना। पर चलो, तब तक जबतक लक्ष्य प्राप्त न कर लो।

युग बीत गये, एक श्रेष्ठ संस्कृति का जनक, विश्वगुरु का उपाधिमण्डित देश, जहाँ ज्ञान का सूर्य सबसे पहले उदय हुआ था। बिल्कुल अन्ध तमस अंधकार में गुलामी की जंजीरों में जकड़ा, विदेशी शासन के शोषण, अत्याचार से त्रस्त, चारों ओर से विकराल समस्याओं, अंध विश्वासों, रूढ़ियो से घिर, चुनौतियों ही चुनौतियाँ, आशा की क्षीण किरण भी नहीं। एकदम हारा थका निर्बल तार-तार हुआ मनोबल। जैसे सब मृतप्राय।

जैसे किसी भयानक विवर्त में फंसे प्राणी की पकड़ में कोई लाइफबोट आ जाये, वैसे ही कभी सतयुग में उच्चारित कठोपनिषद् की तृतीय वल्ली का यह चौदहवां मंत्र जो अनन्तकाल की परतों में दबा पड़ा था, उसे युवा संन्यासी विवेकानन्द ने केवल खोज ही नहीं निकाला, उसे अपना सशक्त स्वर दिया। आह्वान, उद्घोष की तरह पूरे भारत क्या विश्व में गुंजा दिया। और भी उद्घोष जुड़ते गये ओर इस आख्यान से ऊर्जा प्राप्त करते भारतीयों ने मानों छुरे की तीक्ष्ण धार पर चलते सारी बाधाओं को पार करके आजादी का लक्ष्य पा ही लिया। विवेकानन्द का सम्पूर्ण व्यक्तित्व 'उत्तिष्ठत जाग्रत....' के साथ एकाकार हो गया।

आज फिर हमारे देश के सामने इतनी उलझी चुनौतियाँ हैं, सिरफिरी समस्यायें हैं जैसे हर समस्या का न कोई ओर छोर है न सिर है न सिरा। कहां से पकड़ें, समस्या किधर से पकड़ें। ऐसा भयंकर जकड़ जाल कि देश छटपटा रहा है। जीवन का हर क्षेत्र चाहे वह राजनीति हो, समाजसेवा हो, नेताओं का उन्मुक्त भ्रष्टाचार हो, धर्माचार्यों की गिरती साख हो, प्रशासन, खेल, व्यापार, घर-परिवार, युवा वर्ग की उच्छृंखलता हो, बाहुबलियों की निरंकुशता, निर्बल पर अत्याचार हो, महिलाओं का उत्पीड़न हो, अबोध बालक-बालिकाओं का शोषण हो, ग्रामीण क्षेत्रों की विकट ताड़का से गरजती कृत्या और पूतना सी भयंकर समस्यायें हों, प्रकृति का अंधाधुन्ध शोषण हो- इनसे जूझेगा कौन?

क्या 'उत्तिष्ठत जागृत....' आज फिर हमें इन चुनौतियों से जूझने की हिम्मत देगा, पैरों में ताकत देगा कि तीक्ष्ण धार पर चलते हुए लहूलुहान होते हुए भी हम चलते रह सकें, क्या इतना मनोबल देगा कि इनका समाधान करके एवं लक्ष्य प्राप्त करके ही दम लेंगे? *(क्रमशः)*

-४२३सी, सेक्टर-बी, महानगर, लखनऊ

होता सदस्य परिचय-47

पतंजलि योग समिति लखनऊ पूर्वी क्षेत्र की महिला प्रभारी

श्रीमती मीना दीक्षित

आध्यात्मिक क्षेत्र में ओज और आस्था की उभरती हुई शक्ति के रूप में श्रीमती मीना दीक्षित का नाम लिया जाता है। अगस्त 2008 से आप निरन्तर सी.एम.एस. गोमती नगर, लखनऊ में महिलाओं को सायंकालीन योगशिविर के माध्यम से योग प्रशिक्षण दे रही हैं। आपके प्रशिक्षण का तरीका बेहद सरल, आकर्षक और सुरुचिपूर्ण होता है। इतनी योग्यता एवं अधिकारपूर्ण ढंग से महिलाओं को योग सम्बन्धी शिक्षा हासिल करने का लखनऊ में शायद ही कहीं अन्यत्र अवसर मिलता होगा! श्रीमती दीक्षित बतलाती हैं– 'मन में यही इच्छा रहती है कि महिलाएँ अपने अमूल्य शरीर के महत्व को समझें। खान पान को सुधारें तथा अपने आपको बड़ी एवं गम्भीर बीमारियों की गिरफ्त में न आने दें।'

मीना दीक्षित का जन्म 01.09.1967 को कन्नौज में पिता श्री गोपाल कृष्ण तिवारी तथा माता स्व.राजेन्द्री तिवारी के घर में हुआ था। आपके पिता कृषि वैज्ञानिक हैं तथा माता जी स्व. राजेन्द्री तिवारी पर्यावरण रक्षा संबन्धी कार्यों में विशेष रुचि रखती थीं। माता–पिता की शिक्षा और संस्कारों का प्रभाव मीना जी के जीवन पर प्रत्यक्ष देखा जा सकता है।

बी.एस–सी. तथा राजनीति विज्ञान में एम.ए. करने के बाद मीना जी प्रशासनिक सेवा में जाना चाहती थीं, किन्तु वैवाहिक बन्धनों में बंधने के बाद उन्होंने अपने आप को योग विज्ञान की ओर मोड़ दिया। आपके दो भाई सर्वेश और दीपक क्रमशः वकालत और सॉफ्टवेयर क्षेत्र में कार्य कर रहे हैं।

1992 में मीना जी श्री योगेश दीक्षित के साथ परिणय सूत्र में आबद्ध हो गईं। योगेश जी भारतीय जीवन बीमा निगम में विकास अधिकारी हैं। मीना जी के शब्दों में– 'मेरे हर कार्य में मेरे पति की बहुत ही अच्छे सहयोगी की भूमिका रहती है। मेरे सारे बल के पीछे, पति का बल है, जिसके कारण आज मैं समाज में कुछ करने में सफल हूँ।'

मई 2007 में स्वामी रामदेव जी महाराज का जो योग शिविर अम्बेडकर मैदान, लखनऊ में लगा था; मीना जी ने उसमें भाग लिया ओर योग शिक्षा प्राप्त की। स्वामी रामदेव के पावन सान्निध्य और निर्देशन से उनके जीवन की दिशा बदल गई। तत्पश्चात् आप योग प्रशिक्षक शिविर में शामिल हुईं तथा पतंजलि योग समिति के अनुरोध पर अगस्त 2008 से सी.एम.एस. गोमती नगर, लखनऊ में नियमित रूप से महिलाओं को योग प्रशिक्षण देने लगीं। यह कार्यक्रम अद्यतन अप्रतिहत गति से जारी है।

मीना जी को पर्यावरण के प्रति रुझान विरासत से मिली है। वे चाहती हैं कि स्वस्थ शरीर के साथ ही पर्यावरण भी स्वस्थ रहे। व्यक्ति और देश का विकास मनुष्य और पर्यावरण के विकास और सामंजस्य में ही निहित है।

मीना जी के परिवार में उनके तीन पुत्र हैं; जो अभी शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं–आयुष, अनिन्द और तेजस। आपके श्वसुर स्व.गौरी दीक्षित सिंचाई विभाग में अधीक्षण अभियंता थे तथा सासु श्रीमती चन्द्रा दीक्षित धार्मिक क्रियाओं में लगी रहती हैं। मीना जी बड़ी तल्लीनता से उनकी सेवासुश्रूषा करती हैं और इसे पुण्य कार्य मानती हैं।

सत्यार्थ प्रकाश, ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका, संस्कार विधि इत्यादि महर्षि दयानन्द के ग्रंथों और विचारों के स्वाध्याय से मीना दीक्षित को नया आलोक मिला है–'आर्य लोक वार्ता' का वे नियमित स्वाध्याय करती हैं। आध्यात्मिक एवं योग सम्बन्धी विषयों पर दक्षता पूर्वक प्रवचन करती हैं। लखनऊ की महिलाओं को मीना जी के योग शिविरों से अधिकाधिक लाभ उठाना चाहिए। उनकी सेवाएँ लखनऊ के लिए गौरव का विषय है।

सौम्य, शालीन और सुदृढ़ व्यक्तित्व की धनी मीना दीक्षित का आदर्श वाक्य (मोटो) है–

'भव तापेन हि तप्तानां–
योगो हि परम साधनम्।'

(आर्य लोक वार्ता–न्यूज डेस्क)

काव्यायन

श्रद्धानन्द बलिदान दिवस (२३ दिसम्बर)

हे स्वतंत्रता के अग्रदूत!

❑गौरीशंकर वैश्य 'विनम्र'

हे स्वतंत्रता के अग्रदूत! सद् देशभक्त, दृढ़ आर्य वीर!
जन-जन उर सौहार्द भरा, वंचित शोषित की हरी पीर।
मुस्लिमजन मध्य, वेद ध्वनि से प्रभु शक्तिमान का दिया ज्ञान,
ईश्वर है माता-पिता सदृश, कण-कण में वह है विद्यमान।
ऋषि दयानन्द के परम शिष्य, विद्वान, मनीषी, विज्ञानी,
गुरुकुल शिक्षा पद्धति देकर, अनुगुंजित की वैदिक वाणी।
तप, त्याग, सत्य के अनुयायी, निर्भयता नस-नस में घोली,
बोले थे आंग्ल-सैनिकों से, 'यदि साहस हो तो मारो गोली'!
करके संकल्प राष्ट्रभक्तों! फहराओ ओम-पताका को,
फिर विश्व पटल पर चमकाओ, सत्यार्थ लोक के राका को।

–117, आदिल नगर, पो.–विकास नगर, लखनऊ–22

चेतना

❑डॉ. कैलाश निगम

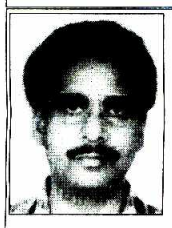

ढरक गया है दिनमान का प्रभा विधान
नभ में उतर रही साँझ की सवारी है।
पथ अनजाना कहाँ जाना ये बताये कौन
पंथ पगडंडियों की भीड़ बड़ी भारी है।
तन है शिथिल, मन क्लान्त है, घना है तम
भ्रमित हुआ है मन बुद्धि गयी मारी है।
बार-बार चमक-चमक दिखलाती पथ
चपला नहीं है यह चेतना हमारी है।

–4/522, विवेक खण्ड, गोमतीनगर, लखनऊ

पर्यावरण

❑नरेन्द्र भूषण

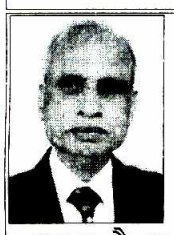

श्वास है सबको जरूरी, खास है या आम है।
शुद्ध वायु न मिले समझो, खड़ा चिन्ह विराम है।
'तरू' स्वयं विष निगल कर, है स्वच्छ करता वायु को,
सत्यम, शिवम, सुन्दरम् इसमें एकरूप ललाम है।
प्राणवायु प्रदान करते, वनस्पतियाँ वृक्ष सब,
रहे कोई स्वस्थ जब, जीवन तभी अभिराम है।
सदा कोसेंगी हमें पीढ़ियाँ भावी निरन्तर,
पड़ेगा उनको भुगतना, जो दुखद परिणाम है।
स्वच्छ पर्यावरण ही यदि नहीं दे पाये उन्हें,
निरर्थक है शेष जो भी जुटाया धन-धाम है।
ठान लें, अब वृक्ष हमको लगाने हैं निरन्तर,
उन्हें भी परिजन समझकर पालना अविराम है।।

सी–2/182, सेक्टर–एफ, जानकी पुरम, लखनऊ

कवि माहात्म्य

❑राजा भइया गुप्ता 'राजाभ'

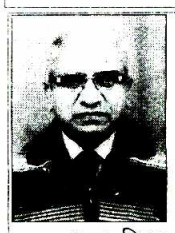

शब्द सिन्धु से उचित शब्द चुनकर लाना आसान नहीं है।
किसी भाव को उचित शब्द से कह पाना आसान नहीं है।।

शुष्क पड़े मरु मानस में रस बरसाना आसान नहीं है।
भाव नकारात्मक से धरती को सरसाना आसान नहीं है।।

शब्दों के विन्यास कार्य में रस लाना आसान नहीं है।
रस को दिल की गहराई में पहुँचाना आसान नहीं है।।

कवि संवेदी है उसके जैसा दिल पाना आसान नहीं है।
सारे जग में एक क्रूर कवि मिल पाना आसान नहीं है।।

सिर्फ निराला जी का दम था निज सर्वस्व लुटा देना,
अन्य किसी कवि द्वारा इसको दुहराना आसान नहीं है।।

–बी–2/356, सेक्टर–ए, जानकी पुरम, लखनऊ–226021

शुभ हो नूतन वर्ष!

❑डॉ. मिर्ज़ा हसन 'नासिर'

मंगलमय हो आपको, नवल वर्ष श्रीमान।
जीवन भर मिलते रहें, नवल नवल वरदान।।

दिन हों सारे ईद के, दीवाली की रातें,
नवल निशा वासर नवल, फूलों की हों बातें।
चहुँदिशि होती ही रहें, ख़ुशियों की बरसातें,
वर्षनवल में नित मिलें, 'नासिर' नव सौगातें।
शुभ हो नूतन वर्ष यह, बढ़े मान-सम्मान।
हिन्दी भाषा की करें, जग में ऊँची शान।।

नभ में प्रकटे सूर्य नव, विनसे सब अँधियारा,
फूलों का मौसम रहे, महके मधुबन सारा।
प्रेम-मिलन सद्भाव की, नित्य बहे अब धारा,
दूर रहें कंटक सकल, चमके भाग्य-सितारा।
बाँटें ख़ुशियाँ प्रेम-मुद, करें लोक-कल्यान।
अविरत करते भी रहें, भारत का गुणगान।।

–जी–02 लोरपुर रेज़ीडेन्सी, न्यू हैदराबाद, लखनऊ

प्रतिपल हो पुनीत!

❑देवनारायण भारद्वाज

प्रति पग जगमग प्रतिपल पुनीत
जीवन तेरा हो न्याय नीत।
छल-बल दुःसाहस करता है।
सर्वत्र अकड़ता फिरता है।
क्रूरता अपहरण हिंसा से,
जो अपने कोठे भरता है।
यह समझ हार मत समझ जीत।
जीवन तेरा हो न्याय नीत।।
कुछ दिन की तेरी मस्ती है।
बसती मस्ती की बस्ती है।
न्यायाधीश निरंजन सहसा,
फिर हरता तेरी हस्ती है।
करता जग घृणा, नहीं प्रीत।
जीवन तेरा हो न्याय नीत।।
तू जिसे जीत कर आयेगा,
उसको ही सम्मुख पायेगा।
प्रभु के प्रतिकार प्रहारों से,
तू रोयेगा पछतायेगा।।
माँ वेदधेनु की यही रीत।
जीवन तेरा हो न्याय नीत।।

–'वरेण्यम्' अवन्तिका(1) रामघाट मार्ग, अलीगढ़

हर्ष–चतुष्पदी

जाना है!

❑बाँके बिहारी 'हर्ष'

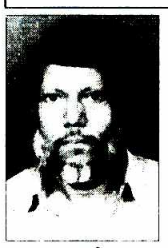

दावत-ए-वलीमा एक जमाने से जाना है।
द नेम आफ अल्लाह आपसे जाना है।
कि आपसे जाना सो क्या अनजाना है।
एक तू ही निरंकार सर्वेश्वर सबमें समाना है।
संगत आर्य समाज से यह सहर्ष जाना है।
बहुवाद-वृथा अपवाद निष्कर्ष जानाहै।
इंशा अल्लाह! अभी हूँ, नहीं जीते जी जाना है।
कबकैसे उसकी मर्जी, नहीं किसी ने जाना है।।

–अवध मोटर वर्क्स, सिविल लाइन्स, फैजाबाद

कालजयी काव्य

स्वामी विवेकानन्द जन्म दिवस (१२जनवरी)

बाल प्रश्न

❑सुमित्रनन्दन पंत

''माँ! अल्मोड़े में आये थे
जब राजर्षि विवेकानन्द,
तब मग में मखमल बिछवाया,
दीपावलि की विपुल अमंद,
बिना पाँवड़े पथ में क्या वे
जननि! नहीं चल सकते हैं?
दीपावलि क्यों की? क्या वे माँ!
मंद दृष्टि कुछ रखते हैं?''

''कृष्णे! स्वामी जी तो दुर्गम
मग में चलते हैं निर्भय,
दिव्य दृष्टि हैं, कितने ही पथ
पार कर चुके कंटकमय,
वह मखमल तो भक्तिभाव थे
फैले जनता के मन के,
स्वामी जी तो प्रभावान हैं
वे प्रदीप थे पूजन के!''

धर्मरथी

❑उमाशंकर शुक्ल 'शितिकंट'

शौर्य और धैर्य उस धर्म-रथ के सुचक्र,
सत्य-शील सुदृढ़-ध्वजा-पताक के समान।
दम-बल-सद्विवेक-परहित चार-अश्व,
क्षमा-कृपा-समता की रज्जु से जुड़े समान।
ईश-प्रणिधान सारथी-सुजान 'शितिकण्ठ',
ढाल है विरति, जिसकी सन्तोष है कृपाण।
दान चण्ड-परशु, सु-बुद्धि है प्रचण्ड शक्ति,
कठिन-कोदण्ड है विज्ञान-वर का विधान।।

अमल-अचल-मन ही निषंग-संग जहाँ,
शम-यम-नियम के पावक-प्रकाश-बाण।
विप्र-गुरु-पूजा ही कवच जिसका अभेद्य,
विजय उपाय कहाँ दूजा इसके समान।
ऐसा दिव्य जय-रथ सुलभ जिसे हो, उसे,
जीत सकने को कहाँ शत्रु मलते जहान।
होते विजयी हैं सदा, सत्यपथी धर्मरथी,
चाहे सारी संसृति ही उनसे, ले बैर-ठान।।

–'वाणी निलय', 538क/88, त्रिवेणी नगर प्रथम, सीतापुर रोड, लखनऊ

सुबह पूछती सूरज से

❑उमेश 'गर्ग'

नये साल पर वही दुखों की गठरी अपने सिरहाने है,
जो सावन बीत गया, उसकी यादों में दीप जलाने हैं।
आँखों में खामोशी, शुष्क अधरों से दूर हुईं मुसकाने हैं,
द्वार-द्वार पर सन्नाटा, घर के मधुबन युग से वीराने हैं।
सपनों के सौदागर, बेच गए हमको आँसू की जागीरें-
लूट रहे जो सबको, वह चेहरे सब जाने-पहचाने हैं।
सुबह पूछती सूरज से क्या तम के दिन जाने वाले हैं?
जबसे आँखें खोली, देखा दरवाजों पर भूख बिलखती,
काया को ढकने को अबला, फटा पुराना वसन पहनती।
आजादी का सुख तो केवल मुट्ठीभर लोगों ने भोग लिया-
भारत माता अपना दर्द लिए, अब भी द्वार-द्वार सिसकती।।
राजनीति के तामझाम तो बस दिल बहलाने वाले हैं।
हाँ, मैंने भी चाहा था, आलोक हमारी देहरी ठहरे,
मेरी भी आँखों में खुशियाँ हों, हट जाएँ आँसू के पहरे।
हमने भी आवाज उठायी थी, मुट्ठी भर किरनें पाने की-
चीख हमारी लौटी, उन दरबारों से, जो हैं गूंगे-बहरे।।
अपने रहबर तो बस घावों पर नमक छिड़कते वाले हैं।।

–'कला-सदन', 363ए/4, मोती नगर, लखनऊ

राजस्थान-समाचार

अन्तर्राष्ट्रीय मंच से अर्जुनदेव चड्ढा का ओजस्वी उद्‌बोधन

कोटा, ६ दिसम्बर २०१३। अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन साउथ अफ्रीका के डरबन में आयोजित हुआ जिसमें १ दिसम्बर को एक सत्र चिकित्सा विषय पर आधारित था। उक्त सत्र में लगभग आठ देशों के स्वास्थ्य विशेषज्ञों ने डरबन के सिटी हाल में सभा को सम्बोधित किया। भारत से कोटा राजस्थान के प्रतिनिधि श्री अर्जुनदेव चड्ढा ने कहा कि आज १ दिसम्बर विश्व एड्स दिवस है अतः हमें एड्स बचाव जागरूकता पर अधिक बल देना होगा। एड्स बीमारी की जानकारी सर्वप्रथम साउथ अफ्रीका से ही प्रारंभ हुई थी। श्री चड्ढा ने कहा कि इसके बारे में विश्व भर में लोगों को सचेत किया जा रहा है। श्री चड्ढा ने कहा कि उन्होंने सैकड़ों एड्स पीड़ित देखे हैं जिसमें एक भी आर्य समाजी नहीं था, कारण आर्य समाज वो फैक्ट्री है जिसमें मनुष्य का चरित्र निर्माण किया जाता है और चरित्रवान् व्यक्ति को एड्स हो ही नहीं सकती क्योंकि वह एक पत्निव्रत अथवा पतिव्रता धर्म निभाता है।

आर्य समाज ने छात्राओं को बांटे गर्म स्वेटर

कोटा, १६ दिसम्बर। सामाजिक सेवा कार्यों के प्रति आर्य समाज सदैव से ही अपनी अहम भूमिका निभाता रहा है। विशेषकर जरूरतमंद, असहाय, निर्धनों व छात्र-छात्राओं में आवश्यकतानुसार सामग्री वितरित करके। उक्त विचार आर्यसमाज के जिला प्रधान श्री अर्जुनदेव चड्ढा ने राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय, तलवंडी, कोटा में आयोजित कार्यक्रम में व्यक्त किये। आर्य समाज जिला सभा द्वारा स्कूल की जरूरतमंद छात्राओं को स्कूल ड्रेस की गर्म जर्सियां वितरित करते हुए जिला सभा के मंत्री कैलाश बाहेती ने कहा कि जिला सभा के माध्यम से हम कोटा जिले में विभिन्न प्रकार के सेवा कार्य कर रहे हैं। आर्य समाज के विद्वान पं.रामदेव शर्मा ने कहा कि नारी शिक्षित होकर पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर कार्य कर रही है यह महर्षि दयानन्द की देन है। छात्राओं को सम्बोधित करते हुए आर्य समाज विज्ञान नगर के प्रधान जे.एस.दुबे ने कहा कि आर्य समाज पिछले २५ वर्षों से नगर की विभिन्न कच्ची बस्तियों में ऋतु अनुसार वस्त्र वितरण का कार्य कर रहा है। इस अवसर पर श्री रामप्रसाद याज्ञिक, श्योराज वसिष्ठ एवं क्षेत्रपाल आर्य ने भी अपने विचार प्रस्तुत किये।

कार्यक्रम का आरम्भ प्रार्थना मंत्रों से हुआ तत्पश्चात् विद्यालय की प्राचार्या श्रीमती निर्मला आर्या ने अतिथियों का स्वागत करते हुए कहा कि आर्य समाज ने सेवा का यह पुनीत कार्य करके छात्राओं को ही नहीं विद्यालय को भी उपकृत किया है। श्रीमती आर्या ने आर्य समाज जिला सभा का धन्यवाद करते हुए कहा कि निःस्वार्थ भावना से सही स्थान पर सही पात्र को दिया गया दान ही सार्थक दान है।

लखनऊ-समाचार

दुर्गा प्रसाद को पत्नी शोक

आर्य समाज इन्दिरा नगर, लखनऊ के सक्रिय सदस्य श्री दुर्गा प्रसाद श्रीवास्तव की धर्मपत्नी श्रीमती पायला श्रीवास्तव का गत ३०.१०.१३ को निधन हो गया। उनकी पुण्यस्मृति में शान्ति यज्ञ श्री डोरीलाल आर्य, मंत्री आर्य समाज इन्दिरा नगर एवं अन्य पारिवारिक जनों की उपस्थिति में वैदिक विधि से सम्पन्न हुआ। 'आर्य लोक वार्ता' हार्दिक शोक संवेदना व्यक्त करता है।

उत्तराखण्ड-समाचार

पुरस्कारों हेतु नाम आमंत्रित

माता लीलावती आर्यभिक्षु परोपकारिणी न्यास, आर्य वानप्रस्थ आश्रम, ज्वालापुर हरिद्वार की ओर से प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी विभिन्न पुरस्कारों के लिए नाम आमंत्रित हैं। पुरस्कार महात्मा आर्यभिक्षु (स्वामी आत्मबोध सरस्वती) के दीक्षा दिवस ३१ जनवरी को प्रदान किये जायेंगे। पुरस्कारों की श्रेणी इस प्रकार है-

१. स्वामी धर्मानन्द विद्यामार्तण्ड आर्यभिक्षु पुरस्कार - आर्य विद्वान के लिए
२. ब्र.अखिलानन्द आर्यभिक्षु पुरस्कार - नैष्ठिक ब्रह्मचारी के लिए
३. स्वामी आत्मबोध सरस्वती कर्मवीर पुरस्कार -श्रेष्ठ आर्य कार्यकर्ता के लिए

उपर्युक्त पुरस्कारों के लिए ३१ दिसम्बर २०१३ तक प्रस्ताव (आवेदन) प्रधान अथवा मंत्री, न्यास के नाम से सम्पूर्ण विवरण-शैक्षिक योग्यता, लेखन, प्रचार कार्य, जनहित में योगदान, दो फोटो आदि के साथ अपने दूरभाष या चलभाष एवं पूर्ण पते सहित भेजें। -देवराज आर्य, मंत्री (०६६६७०७०७८६)

अलीगढ़-समाचार

आचार्य बुद्धदेव का निधन

गुरुकुल संस्कृत महाविद्यालय साधु आश्रम हरदुआगंज, अलीगढ़ के प्राचार्य डॉ.हरवीर सिंह (आचार्य बुद्धदेव) की दिनांक २६ नवम्बर २०१३ को गुरुकुल के समीप नदी के किनारे अज्ञात हमलावरों द्वारा गोली मारकर हत्या कर दी गई। आचार्य जी के साथ गुरुकुल के ब्रह्मचारी को भी निशाना बनाया गया लेकिन वह बच गया।(दैनिक पत्र, अमर उजाला के अनुसार) षडयन्त्रकारी गुरुकुल की बेशकीमती जमीन को हड़पना चाहते थे, जबकि आचार्य जी उनका विरोध करते चले आ रहे थे।

उनकी स्मृति में श्रद्धांजलि सभा मंगलवार १० दिसम्बर को गुरुकुल साधु आश्रम अलीगढ़ में सम्पन्न हुई।

हरदोई-समाचार

आर्यसमाज सण्डीला

दिनांक २७ नवम्बर २०१३ को आर्य समाज मंदिर प्रांगण में एक विशेष चिन्तन बैठक का आयोजन हुआ, जिसमें यह निश्चय किया गया- (१) शाकाहार का प्रचार व्यापक स्तर पर किया जाये, जन-जन तक यह संदेश दिया जाये कि शाकाहार ही केवल मानवमात्र का भोजन है। सभी स्वास्थ्य विशेषज्ञों, वैज्ञानिकों, धर्मगुरुओं ने एक मत यही राय दी है। (२) जीवहत्या मानवता के लिए अभिशाप है, हमारी मांग है कि मानव अधिकार आयोग के स्थान पर प्राणीरक्षा आयोग की स्थापना की जाय। सभी प्रकार की जीवहत्या पर पूर्ण प्रतिबन्ध लगाया जाय। संयुक्त राष्ट्रसंघ में भी ऐसे ही आयोग की स्थापना की जाय, जिससे विश्व भर में जीवहत्या रोकी जा सके।

गोष्ठी में सभी विचारकों, लेखकों, कवियों, चिकित्सकों, सभी सम्प्रदाय के विचारकों से अनुरोध किया गया कि यदि उपर्युक्त विचार हृदयस्पर्शी लगें तो इस अभियान को गति देने में विलम्ब न करें। *(डा.सत्यप्रकाश आर्य)*

कानपुर-समाचार

आर्यसमाज बर्रा का वार्षिकोत्सव

आर्य समाज बर्रा, कानपुर का वार्षिक उत्सव दिनांक ६, ७, ८ दिसम्बर १३ को समारोहपूर्वक सम्पन्न हुआ। प्रातः कालीन सत्र में यज्ञ, भजन, वेदोपदेश तथा सायंकालीन सत्र में संध्योपासना, भजन, प्रवचन, व्याख्यान होते रहे। आमंत्रित वक्ताओं एवं भजनोपदेशकों में आचार्य हरिशंकर अग्निहोत्री, प्रदीप आर्य तथा नेम प्रकाश आर्य के नाम प्रमुख हैं। श्री नेम प्रकाश आर्य के ओजस्वी भजनों के साथ ही धनुर्विद्या एवं शारीरिक कौशल का प्रदर्शन जनता के आकर्षण का प्रमुख विषय बना। बड़ी संख्या में तीनों दिन आर्य समाज के प्रचार कार्य को लोगों ने सुना और सराहा।

(डॉ.जी.पी.सिंह, प्रधान)

सीतापुर-समाचार

आर्यसमाज उत्सव

वीरेन्द्र कुमार आर्य 'वीरजी' सूचित करते हैं कि सीतापुर जनपद में जिला वेद प्रचार योजना के अन्तर्गत आगामी ११ तथा १२ जनवरी २०१४ को रामकोट के सन्निकट रामनगर में आर्य समाज उत्सव का आयोजन किया गया है। इस उत्सव में जिले के आर्य वक्ताओं के अलावा हरदोई के ख्यातिलब्ध प्रचारक श्री नेमप्रकाश आर्य पधार रहे हैं। आपके ओजस्वी भजनों के साथ ही धनुर्विद्या एवं शारीरिक कौशल के अनेक कार्यक्रम जनता को देखने को मिलेंगे।

फतेहपुर-समाचार

वार्षिकोत्सव

आर्य समाज शिवपुरी, फतेहपुर का वार्षिकोत्सव ५ से ७ नवम्बर १३ तक समारोहपूर्वक मनाया गया। प्रातःकाल यज्ञ, भजन, प्रवचन तथा सायंकाल भजन एवं व्याख्यान प्रतिदिन होते रहे। जिन विद्वान् उपदेशकों को समारोह में आमंत्रित किया गया, उनमें प्रमुख हैं-पं.हरिशंकर अग्निहोत्री, श्री राम प्रसाद आर्य तथा पं.नेम प्रकाश आर्य धनुर्विद्याविशारद। श्री नेमप्रकाश द्वारा धनुर्विद्या प्रदर्शन उत्सव में विशेष आकर्षण का केन्द्र बना। श्री दयालशरण सिंह, प्राचार्य, रोशनसिंह महाविद्यालय की अध्यक्षता में कार्यक्रम सम्पन्न हुए। *(प्रदीप सिंह आर्य, मंत्री)*

अर्न्तराष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन सम्पन्न

साउथ अफ्रीका के डरबन महानगर में दिनांक २८ नवम्बर से १ दिसम्बर २०१३ तक आयोजित अर्न्तराष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन में भाग लेकर कोटा लौटने पर अर्जुन देव चड्ढा ने बताया कि सम्मेलन का २८ नवम्बर को आचार्य बल्देव, डॉ.उषा देसाई व डा.रामविलास ने डरबन के सिटी हाल के भव्य सभागार में दीप प्रज्ज्वलित कर एवं प्रार्थना मंत्रों का उच्चारण करते हुए शुभारंभ किया।

कार्यक्रम के प्रथम दिन सम्पन्न हुए विश्व वेद सम्मेलन के अन्तर्गत विद्वानों, संन्यासियों व विशेषज्ञों के प्रवचन हुए जिसमें आर्य समाज का विश्वव्यापी प्रभाव, वेद मंत्रों की व्याख्या, हिन्दू एकता तथा वैदिक जीवन पद्धति इत्यादि अनेक महत्त्व पूर्ण विषयों पर चर्चाएँ हुईं। ३० नवम्बर को दोपहर २ बजे डरबन के उपनगर फीनिक्स में शोभायात्रा का अयोजन किया गया जिसका उद्देश्य महिला एवं बाल उत्पीड़न के विरोध में आवाज उठाना था। यह शोभायात्रा फिनिक्स के रायडाल्वेल ग्राउण्ड से आरम्भ हुई जिसका नेतृत्व आचार्य बल्देव ने किया। शोभायात्रा में सबसे आगे संन्यासीवृन्द, साउथ अफ्रीका आर्य समाज की प्रधाना श्रीमती उषा बेन पटेल, कार्यक्रम संयोजक डॉ.रामविलास व अन्य चल रहे थे, उनके पीछे आर्य समाज के राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय पदाधिकारी व सम्मेलन में भाग लेने आये भारतीय व अन्य देशों के प्रतिभागी हाथों में तख्तियाँ जिन पर नारे लिखे हुए थे, लेकर चल रहे थे। शोभायात्रा में विभिन्न देशों से आये व स्थानीय नागरिक जिनकी संख्या लगभग १००० थी, नारे लगाते हुए चल रहे थे। पूरे फिनिक्स क्षेत्र के मुख्य मार्गों पर होते हुए लगभग ५ किलोमीटर की यात्रा पूरी कर शोभायात्रा वापस रायडाल्वेल ग्राउण्ड पर समाप्त हुई। शोभायात्रा की सुरक्षा व्यवस्था हेलीकॉप्टर से हो रही थी तथा महिला एंव पुरुष पुलिस बल इसके साथ तैनात था।

रायडावेल्स के विशाल ग्राउण्ड में भव्य एवं सुसज्जित पांडाल में २५१ कुंडीय महायज्ञ का आयोजन किया गया। प्रत्येक हवन कुण्ड के साथ आवश्यक सामग्री जिसमें हवन सामग्री, घृत, जलपात्र, कपूर, दीपक, माचिस, चम्मच व मिष्ठान्न आदि रखे गये थी। सारे हवन कुंड नये बनवाये गये थे। प्रत्येक हवन कुंड के चारों तरफ कुर्सियां लगवाई गयी थी जिसपर बैठकर आसानी से हवन किया जा सके। इसी पांडाल में एक भव्य मंच बनाया गया था जिस पर सम्मेलन में आये सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान आचार्य बल्देव व २० से अधिक संन्यासीवृंद विराजमान थे। सुन्दर व आकर्षक सजावट के साथ व्यवस्थित साउण्ड व्यवस्था थी। यज्ञ के ब्रह्मा डॉ.रामविलास ने प्रार्थना मंत्रों के साथ यज्ञ प्रारम्भ करवाया तथा प्रार्थना के हर मंत्र की उन्होंने हिन्दी व अंग्रेजी में व्याख्या की। १००० से अधिक लोगों ने इस महायज्ञ में भाग लिया। तत्पश्चात मंच पर उपस्थित विद्वानों के प्रवचन हुए, संगीतमय भजनों की प्रस्तुति दी गई। शांतिपाठ के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ। सभी के लिए भोज की व्यवस्था थी।

दिल्ली-समाचार

दिल्ली हाई कोर्ट ने लगाई आर्यसमाज के नामपर चल नहीं नकली संस्थाओं में विवाहों पर रोक

दिल्ली उच्च न्यायालय ने यमुना बाजार आदि स्थानों पर स्थित नकली आर्य समाजों में अवैध रूप से हो रहे विवाहों पर सर्टिफिकेट जारी करने पर रोक लगा दी है। जस्टिस हीमा कोहली जी ने दिल्ली हाई कोर्ट के केस नम्बर डब्लू.पी.सी. आर.एल.१५८३/२०१० में सुनवाई के दौरान दिल्ली की आर्यसमाजों की शिरोमणि संस्था दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५ हनुमान रोड, नई दिल्ली के प्रार्थना पत्र पर विचार करते हुए, भारत के संविधान के अधिनियम 'आर्य विवाह विधि मान्य अधिनियम १९३७' का हवाला देते हुए, उक्त आदेश पारित किया, जिसके आधार पर अब नकली आर्यसमाजें विवाह नहीं कर सकेंगी तथा इससे युवाओं की भावनाओं का लाभ उठाकर कुछ लोग जो शोषण किया करते थे, उस पर रोक लगेगी। दिल्ली में जिन आर्यसमाजों के मन्दिरों में विधिपूर्वक संविधान अनुसार विवाह कराने की व्यवस्था है तथा समस्त कार्यवाही पूरा करने के पश्चात् प्रमाण पत्र जारी किया जाता है उनकी सूची सभा की वेबसाइट पर प्रदर्शित की गई है।

टाण्डा-समाचार

आर्य समाज टाण्डा का 122वाँ वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्य समाज टाण्डा का १२२वाँ वार्षिकोत्सव १३ से १७ नवम्बर २०१३ तक हर्षोल्लास से सम्पन्न हुआ। बाबू आनन्द कुमार आर्य प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा बंगाल एवं श्री रवि चन्द्र आर्य मंत्री व श्री अनूप कुमार मौर्य कोषाध्यक्ष के श्लाघनीय पुरुषार्थ से प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी कार्तिक सुदी एकादशी से कार्तिक पूर्णिमा तक समारोह स्थल मिश्रीलाल आर्य कन्या इंटर कालेज एवं डी. ए.वी.एकेडमी टाण्डा में कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

दिनांक १३ नवम्बर को २ बजे विशाल शोभायात्रा निकाली गई जिसके संयोजक श्री ओम प्रकाश आर्य, चन्द्रगुप्त मौर्य, सौरभ आर्य थे। डॉ.सोमदेव शास्त्री, डॉ.कैलाश कर्मठ, कोलकाता, आचार्य प्रियम्वदा वेद भारती नजीबाबाद का सारगर्भित उद्‌बोधन हुआ। कार्यक्रम में श्री मिठाईलाल सिंह व अरुण अब्रोल प्रधान तथा मंत्री आर्य प्रतिनिधि सभा मुम्बई, श्री देवेन्द्रपाल वर्मा, प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा लखनऊ इत्यादि आर्य नेताओं का मार्गदर्शन प्राप्त हुआ।

लखनऊ-समाचार

स्वागतोत्सव

२८ नवम्बर, २०१३ रविवार की तिथि श्री सन्तोष कुमार आर्य एवं श्रीमती शोभा के आर्य परिवार की शोभा और सन्तोष का कारण बनी; जबकि बंगलौर (कर्नाटक) में कार्यरत उनके सुपुत्र गौरव एवं पुत्रवधू सोनल अपने नवजात पुत्र चि.अदविक आर्य को लेकर प्रथम बार लखनऊ आये।

आर्य परिवार की अपेक्षाओं के अनुरूप- इस अवसर पर श्री संतोष जी के आवास, २०६, कल्याण अपार्टमेंट, इन्दिरा नगर, लखनऊ में सुन्दर वैदिक यज्ञ का आयोजन वैदिक विद्वान् डॉ. वेद प्रकाश आर्य के आचार्यत्व में सम्पन्न हुआ। आयोजन में उपस्थित विशिष्ट अतिथियों- श्रीमती आशा आर्या, आर.एन. सक्सेना, वीरेन्द्र कुमार सक्सेना, राजीव, श्रीमती निशा, दीपक दर्शन, श्रीमती सुनीता दर्शन, कुणाल दर्शन, श्रीमती मंजू सोना एवं विक्रम सोना इत्यादि ने चि.अदविक को शुभाशीर्वाद प्रदान किया। स्मरण रहे, श्री सन्तोष कुमार आर्य प्रख्यात विद्वान् स्व.शान्तिस्वरूप शास्त्री के सुपुत्र हैं। आर्य परिवार ने यज्ञोपरान्त प्रीतिभोज की व्यवस्था की।

पदोन्नति

अपने मधुर गीत-गायन के लिए विख्यात श्री रुद्रस्वरूप, कोषाध्यक्ष एवं पूर्व मंत्री, आर्य समाज, आदर्श नगर, लखनऊ, जो अभी तक भारतीय स्टेट बैंक की हज़रतगंज, लखनऊ शाखा में कार्य कर रहे थे, प्रसन्नता की बात है कि उनका शाखा-प्रबंधक पद के लिए चयन हो गया है। दिनांक १६.१२.२०१३ को वाराणसी में उन्होंने कार्यभार ग्रहण कर लिया है। श्री रुद्रस्वरूप की पदोन्नति पर शुभकामनाएँ एवं हार्दिक बधाई!

आर्य समाज तेलीबाग का वार्षिक उत्सव

लखनऊ की उदीयमान आर्यसमाज तेलीबाग, का वार्षिक उत्सव समारोहपूर्वक १५, १६, १७ नवम्बर १३ को बलदेव विहार पार्क में मनाया गयां। प्रतिदिन प्रातःकाल ८ से ११ बजे तक यज्ञ, भजन, वेदोपदेश तथा सायंकाल ७ से १० बजे तक संध्योपासना, भजन तथा व्याख्यान होते रहे। बड़ी संख्या में नगर और ग्रामीण जनता ने कार्यक्रमों में सहभागिता दिखाई। वेदोपदेशक पं.सुरेश जोशी, बाराबंकी; आचार्य संतोष कुमार वेदालंकार, लखनऊ; श्रीमती रुक्मिणी जोशी, आर्य भजनोपदेशिका; नेम प्रकाश आर्य, हरदोई के उपदेशों एवं भजनों ने क्षेत्र की जनता को लाभान्वित किया। श्री रमेश चन्द्र आर्य, मंत्री ने कार्यक्रम का संचालन किया तथा श्री बिल्लेश्वर शास्त्री ने धन्यवाद प्रदर्शन किया।

रामदेव आर्य का निधन

आर्य समाज के जाने माने विद्वान् एवं पुरोहित श्री रामदेव आर्य का १३.१२.१३ को इन्दिरा नगर में आकस्मिक निधन हो गया। आपका अन्तिम संस्कार भैंसाकुण्ड शवदाह स्थल पर १४.१२.१३ को किया गया। इस अवसर पर आर्य समाज इन्दिरा नगर के पदाधिकारी एवं पारिवारिक सदस्यगण मौजूद थे।

आर्यसमाज बादशाहनगर के संचालक एवं मंत्री के रूप में स्व.रामदेव आर्य की सेवाएँ सदैव स्मरण की जायेंगी। आर्य प्रतिनिधि सभा, उ.प्र., मीराबाई मार्ग, लखनऊ से भी आप सम्बद्ध रहे तथा कई वर्षों तक 'आर्य मित्र' साप्ताहिक का सम्पादन भी किया। आर्य कन्या पाठशाला इंटर कालेज, बादशाहनगर की आर्य समाज से सम्बद्धता हेतु आपने आजीवन संघर्ष किया तथा न्यायालय की जटिल प्रक्रियाओं को सामना करते हुए सफलता प्राप्त की। पौरोहित्य कार्य में कुशल, मृदुभाषी रामदेव आर्य की आर्य समाज के प्रति सेवाएँ कभी भुलाई नहीं जा सकेंगी। आप 'आर्य लोक वार्ता' के नियमित पाठकों एवं हितैषियों में थे।

कदाचित् उन्हें अपनी मृत्यु का पूर्वाभास हो गया था, दो तीन मास पूर्व कवि हीरालाल 'किरण' (रामपुर) द्वारा रचित महर्षि दयानन्द काव्य की पांडुलिपि- जो उनके पास संरक्षित थी; 'आर्य लोक वार्ता' कार्यालय में आकर दे गये थे। उक्त काव्य को धारावाहिक प्रकाशित करनेका प्रयास किया जायेगा।

आर्य लोक वार्ता सम्मान समारोह

आर्य लोक वार्ता सम्मान समारोह अब 8 मार्च 2014 को राय उमानाथ बली प्रेक्षागृह, कैसरबाग, लखनऊ में आयोजित होगा। समारोह में प्रख्यात आर्य नेता श्री आनन्द कुमार आर्य, प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा बंगाल-आसाम (कोलकाता) तथा श्री अर्जुनदेव चड्ढा 'आर्यलोक रत्न' (कोटा राजस्थान) इत्यादि शीर्ष नेता पधार रहे हैं।

समारोह की सफलता एवं सम्पन्नता हेतु जो दानदातागण सहयोग करना चाहते हैं वे दिनांक 31.01.2014 तक सहयोग राशि नकद अथवा चेक द्वारा प्रेषित कर सकते हैं। इसके अतिरिक्त आप सहयोग राशि 'आर्य लोक वार्ता' के पक्ष में बैंक ऑफ बड़ौदा के बैंक खाते में भी जमा कर सकते हैं, जिसका विवरण इसी पृष्ठ पर दिया गया है। स्मरण रखें, सम्मान समारोह का मुख्य उद्देश्य वैदिक विचार धारा का प्रचार प्रसार है।

-डॉ.वेद प्रकाश आर्य, प्रधान सम्पादक

श्रुति-विनम्र-परिणय

आर्य समाज के अग्रणी नेता श्री विमल कुमार एडवोकेट के सुपुत्र श्री विनम्र कुमार का शुभविवाह संस्कार स्व.अरुण कुमार शुक्ल की सुपुत्री आयु.श्रुति के साथ चरन होटल, चिनहट, लखनऊ के सभामंडप में शुक्रवार, दिनांक ६ दिसम्बर २०१३ को समारोह पूर्वक सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर बड़ी संख्या में पारिवारिक सदस्यों तथा आर्य समाज से सम्बद्ध व्यक्तियों ने वर-वधू को शुभाशीर्वाद प्रदान किया तथा प्रीति भोज में भाग लिया।

वैदिक विधि से विवाह संस्कार प्रख्यात वेद विदुषी आचार्या प्रियंवदा वेदभारती, प्राचार्या कन्या गुरुकुल, नजीबाबाद, बिजनौर तथा पं.दीनानाथ शास्त्री, कोरवा, अमेठी ने सम्पन्न कराया। विनम्र एवं श्रुति को 'आर्य लोक वार्ता' की शुभकामनाएँ!

काव्य संध्या

लखनऊ की साहित्यिक, सांस्कृतिक एवं सामाजिक संस्था 'सुन्दरम्' के तत्वावधान में रविवार, १ दिसम्बर १३ को जानकीपुरम, सेक्टर-एफ स्थित 'सुन्दरम पार्क' में एक काव्य संध्या का अयोजन किया गया, जिसकी अध्यक्षता संस्था के अध्यक्ष एवं गीतकार नरेन्द्र भूषण ने की तथा मुख्य अतिथि थे साहित्यकार डॉ.नरेश कात्यायन। विशिष्ट अतिथि के रूप में फरीदाबाद से पधारी श्रीमती नमिता राकेश उपस्थित रहीं। काव्य संध्या का संचालन हरीप्रकाश 'हरि' ने किया।

घनानन्द पाण्डेय द्वारा माँ सरस्वती की वाणी वन्दना से प्रारम्भ हुए कार्यक्रम में कवियों द्वारा मानव जीवन की विभिन्न विधाओं को स्पर्श करते हुए काव्य पाठ किया गया। डा.नरेश कात्यायन ने नयी पीढ़ी को मर्यादाओं के प्रति सचेत करते हुए- 'सोच में आधुनिक भले रहना, सर पे पल्लू संभाल रखना' कविता का पाठ किया। श्री नरेन्द्र भूषण ने राजनीति पर कटाक्ष करते हुए कहा-'झूठ पर सच का मुलम्मा किस कदर अब आम है, तप रही थी दोपहर वे कह रहे थे शाम है'। इस अवसर पर डा.के.के.सिंह 'मयंक', डा.अशोक शर्मा, सुनील कुमार वाजपेयी, घनानन्द पाण्डे 'मेघ', डा.आनन्द ओझा, हरी प्रकाश 'हरि', नमिता राकेश, रवीन्द्र नाथ तिवारी, अनिल श्रीवास्तव, नीतू सिंह, एस.एस.शुक्ला, नलिनी खन्ना आदि ने अपने काव्य पाठ से श्रोताओं को भाव विभोर कर दिया।

शोध लेख आमंत्रित

भारतीय भाषा प्रतिष्ठापन राष्ट्रीय परिषद् द्वारा हिन्दी के प्रतिष्ठापन हेतु कार्यरत विद्वानों से "राजभाषा हिन्दी का संक्रमण काल एवं भविष्य" विषय पर शोधलेख आमंत्रित किया जाता है। यह आलेख ए-४ साइज पृष्ठ एवं १६ साइज फॉन्ट में दोहरी दूरी पर टंकित होना चाहिए। लेख के प्रारम्भ में १०० शब्दों का सारांश संलग्न हो तथा लेख ६ टंकित पृष्ठों से अधिक न हो। कृपया लेख के शीर्षक के नीचे लेखक अपना नाम, पद, संस्था का नाम, पता पिनकोड सहित, दूरभाष/चलभाष नम्बर अवश्य अंकित कर दें।

लेख विलम्बतम १५ जनवरी २०१४ तक भारतीय भाषा प्रतिष्ठापन राष्ट्रीय परिषद, शाखा उत्तर प्रदेश, लखनऊ के कार्यालय निम्नांकित पते पर प्रेषित किया जा सकता है। लखनऊ कार्यालय का पता- डॉ.मोहन लाल अग्रवाल, ए-७६६, इन्दिरा नगर, लखनऊ-२२६ ०१६। चलभाष-०६४५४७१११३८।

आर्य्य लोक वार्ता

ऋत्विक-मंडल

(प्रतिवर्ष १२०० रु. या अधिक सहयोगकर्त्ता)

माता लीलावती आर्यभिक्षु परोपकारिणी न्यास, ज्वालापुर, **हरिद्वार**; विद्यासागर फाउण्डेशन, **मेरठ**; अम्बिका प्रसाद एडवोकेट, **लखनऊ**; आनन्द कुमार आर्य, **कोलकाता**; श्रीमती वीना उतरेजा, राजाजीपुरम, **लखनऊ**; पाल प्रवीण, अलीगंज, **लखनऊ**; श्रीमती कमलेश पाल, अलीगंज, **लखनऊ**; श्रीमती वीना कटियार, **फर्रूखाबाद**; श्रीमती प्रमोद कुमारी, अलीगंज, **लखनऊ**; जगदीश खत्री, **लखनऊ**; ओजोमित्र शास्त्री, महावीरगंज, **लखनऊ**; अभिषेक, अलीगंज, **लखनऊ**; श्रीमती गीतांजलि, अलीगंज, **लखनऊ**; श्रीमती मिनी स्वरूप, **नई दिल्ली**; कर्नल पाल प्रमोद, **मेरठ**; अरविन्द कुमार, आर्कीटेक्ट, **लखनऊ**; श्रीमती शालिनी कुमार, आर्कीटेक्ट, **लखनऊ**; श्रीमती नीरजा सिंह, प्रधानाचार्या, टाण्डा, **अम्बेडकरनगर**; श्रीमती मधुर भंडारी, **नई दिल्ली**; रमेश चन्द्र त्यागी, **लखनऊ**; ओमप्रकाश सेवक, **लखनऊ**; प्रो.आनन्द वैद्य, **लखनऊ**; पीयूष गुप्त, **सिंगापुर**; श्री रमनलाल अग्रवाल, मजीराबाद, **लखनऊ**; श्रीमती प्रकाश अग्रवाल, **बरेली**; कृष्ण स्वरूप चौधरी, गोमती नगर, **लखनऊ**; श्रीमती सुन्दरी दरियानी, **लखनऊ**; ले.कर्नल चन्द्रमोहन गुप्त, **लखनऊ**; डॉ.सी.वी.पाण्डेय, सर्वोदय नगर, **लखनऊ**; अखिल मित्र शास्त्री, महावीरगंज, **लखनऊ**; श्रीमती प्रमिला पाल, मवाना, **मेरठ**; निशीथ कंसल, विवेकानन्दपुरी, **लखनऊ**; दीपक कुमार दर्शन, अमीनाबाद **लखनऊ**; बी.एन.टण्डन, **बहराइच**; अनूप टण्डन, **मेरठ**; श्रीमती कुसुम वर्मा, इन्दिरा नगर, **लखनऊ**; वेद प्रकाश बटुक, **मेरठ**; सतपाल महाजन, **गुड़गाँव**; प्रणव श्रीवास्तव, **अहमदाबाद**; नरेन्द्र भूषण, जानकीपुरम, **लखनऊ**; आर. सी. यादव, सत्या क्लीनिक, इन्दिरा नगर, **लखनऊ**; इं.प्रेमचंद, गोविन्द विहार, **लखनऊ**; चौधरी रणवीर सिंह, प्रधान, आर्य समाज, **सीतापुर**; श्रीमती मंजू रेलन, गोमती नगर, **लखनऊ**; श्री कृष्ण सिंह, अलीगंज, **लखनऊ**; श्रीमती मनीषा त्रिवेदी, **दुबई**; कौशल किशोर श्रीवास्तव, नया तिलक नगर, **लखनऊ**; अर्जुनदेव चढ्ढा, कोटा, **राजस्थान**; नरसिंह पाल एडवोकेट, राजीव नगर, **लखनऊ**; नरदेव आर्य, एल.डी.ए.कालोनी, **लखनऊ**; श्रीमती मीना दीक्षित, गोमती नगर, **लखनऊ**; श्रीमती इन्द्रा शर्मा, डालीबाग,**लखनऊ**।

संस्थापक
स्व. स्वामी आत्मबोध सरस्वती

प्रधान संपादक
डॉ0 वेद प्रकाश आर्य
'वेदाधिष्ठान' 539क/234, हरीनगर, पो0-इन्दिरानगर, लखनऊ - 226016
9450500138

संपादक (अवैतनिक)
आलोक वीर आर्य
8400038484

प्रसार व्यवस्थापक
अमित वीर त्रिपाठी
9795445800

संवाद प्रमुख
गौरीशंकर वैश्य 'विनम्र'
9956087585

कार्यालय प्रमुख
श्रीमती सरला आर्य
9450500138

E-mail-
aryalokvarta@gmail.com

सहयोग राशि

सामान्य सदस्य	–	100 रु. वार्षिक
व्रती सदस्य	–	250 रु. वार्षिक
ऋत्विक् सदस्य	–	1,200 रु. वार्षिक
होता सदस्य	–	2,500 रु. वार्षिक
संरक्षक	–	12,000 रु.
प्रतिष्ठापक	–	50,000 रु.

सहयोग राशि 'बैंक ऑफ बड़ौदा' की किसी भी शाखा में 'आर्य्य लोक वार्ता' खाते में जमा कर हमें सूचित कर सकते हैं। विवरण इस प्रकार है-
खाता धारक – आर्य लोक वार्ता
खाता सं. – 00500 2000 00579
खाते का प्रकार-चालू खाता
बैंक-बैंक आफ बड़ौदा, हजरतगंज लखनऊ।

प्रतिष्ठापक
श्री आनन्द कुमार आर्य, कोलकाता
डॉ.(श्रीमती)वीना कटियार, फर्रूखाबाद
श्री अरविन्द कुमार आर्कीटेक्ट, लखनऊ

संरक्षक
श्री अर्जुनदेव चड्ढा, कोटा, राजस्थान
श्रीमती प्रमोद कुमारी, लखनऊ
श्रीमती शालिनी कुमार, लखनऊ
श्री कौशल किशोर श्रीवास्तव, लखनऊ
श्री जगदीश लाल खत्री, लखनऊ
श्रीमती कुसुम वर्मा, लखनऊ

परामर्श एवं सहयोग
श्री रघुनाथ सिंह आर्य, कानपुर
श्री वीरेन्द्र कुमार आर्य 'वीरजी', सीतापुर
डा. सत्य प्रकाश, सण्डीला, हरदोई
शिवशंकर लाल वैश्य, सीतापुर

आवश्यक सूचना

कृपया लखनऊ स्थित शिविर कार्यालय के पते का उपयोग करें-

डॉ. वेद प्रकाश आर्य,
प्रधान सम्पादक, आर्य लोक वार्ता
19/838, प्रथम तल, रिंगरोड, इन्दिरा नगर, लखनऊ-226 016

मुद्रक, स्वामी और प्रकाशक डॉ. वेद प्रकाश आर्य के लिए क्रियेटिव ग्राफिक्स, बी-२, हिमांशु सदन, ५-पार्क रोड, लखनऊ द्वारा मुद्रित तथा 'वेदाधिष्ठान' ५३६क/२३४ हरीनगर, (रवीन्द्रपल्ली) पो.-इन्दिरानगर, लखनऊ से प्रकाशित।

ग्राम ग्राम में नगर नगर में, 'आर्य्य लोक वार्ता' घर-घर में